आठ

पहाड़ी उपदेश

The Sermon on the Mount

उन शिष्यों का निर्माण करने की अपनी इच्छा के कारण जो मसीह की सभी आज्ञाओं का पालन करते हैं, शिष्य निर्माण करने वाले सेवकों की रुचि यीशु के पहाड़ी उपदेश में अवश्य होती होगी। यह संदेश या उपदेश आज्ञाओं से भरा है। शिष्य निर्माण करने वाले सेवक इस संदेश में दी गई आज्ञाओं का पालन करने के साथ-साथ अपने शिष्यों को इस बारे में सिखाना भी चाहेंगे।

इसी कारण, मत्ती 5-7 अध्यायों में दिये गए संदेश से मैंने जो कुछ भी समझा है उसे मैं बांटने जा रहा हूं। मैं सेवकों को प्रोत्साहित करता हूं कि पहाड़ी उपदेश के एक-एक पद के बारे में वे अपने शिष्यों को सिखाएं। आशा है कि जो कुछ मैंने लिखा वह अन्त तक सहायक होगा।

नीचे पहाड़ी उपदेश की एक रूपरेखा दी गई है, केवल एक सामान्य निरीक्षण देने तथा प्राथमिक विषयों पर ध्यान देने को।

(1) यीशु ने अपने श्रोताओं को एकत्रित किया (5:1-2)
(2) परिचय (5:3-20)
  (क) धन्य लोगों की विशेषताएं और आशीषें (5:3-12)
  (ख) नमक और ज्योति में बने रहने की शिक्षा (5:13-16)
  (ग) मसीह के अनुयायियों के साथ व्यवस्था का संबन्ध (5:17-20)
(3) संदेश : शास्त्रियों और फरीसियों की तुलना में अधिक धर्मी बनें (5:21-7:12)
  (क) शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत, एक दूसरे से प्रेम करें (5:21-26)
  (ख) शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत, यौन संबन्ध में शुद्ध बनें (5:27-32)

(ग) शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत, ईमानदार बनें (5:33-37)
(घ) शास्त्रियों और फरीसियों के समान एक दूसरे से बदला न लें (5:38-42)
(ङ) शास्त्रियों और फरीसियों के समान अपने शत्रुओं से घृणा न करें (5:43-48)
(च) शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत, सही उद्देश्यों के लिए भला करें (6:1-18)

(1) सही उद्देश्यों से दरिद्रों को दें (6:2-4)
(2) सही उद्देश्यों से प्रार्थना करें (6:5-6)
(3) प्रार्थना और क्षमा के संबन्ध में विषयान्तर (6:7-15)
(क) प्रार्थना के संबन्ध में निर्देश (6:7-13)
(ख) एक दूसरे को क्षमा करने की आवश्यकता (6:8-15)
(4) सही उद्देश्यों से उपवास (6:16-18)
(छ) शास्त्रियों और फरीसियों के समान धन की सेवा न करें (6:19-34)
(ज) अपने भाइयों में छोटी छोटी कमियों को न ढूंढें (7:1-5)
(झ) अप्रशंसनीय को सत्य देने के द्वारा अपने समय को बर्बाद न करें (7:6)
(ञ) प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें (7:7-11)
(4) निष्कर्ष : संदेश का सारांश
(क) एक संक्षिप्त कथन (7:12)
(ख) आज्ञा पालन करने की चेतावनी (7:13.14)
(ग) झूठे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे विश्वासियों की पहचान कैसे करें (7:15-23)
(घ) अनाज्ञाकारिता के विरुद्ध एक अंतिम चेतावनी और एक सारांश (7:24-27)

यीशु ने अपने श्रोताओं को एकत्रित किया
Jesus Gathers His Audience

वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया, तो उसके चेले उसके पास आए। और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा (मत्ती 5:1-2)

ऐसा लगता है कि यीशु जानबूझकर अपने श्रोताओं की संख्या कम करने को 'भीड़' से दूर पहाड़ की ओर जाता है। हमें बताया गया है कि ''उसके शिष्य उसके पास आए'' मानो यह संकेत देने को कि केवल वे जो उसके वचन के भूखे और प्यासे हैं वे ही पर्वत पर चढ़ते हुए उस तक पहुंचेंगे। तौभी, उनमें से कुछ थे जिन्हें 7:28 में 'भीड़' कहा गया है।

यीशु ने तब अपने शिष्यों से बोलते हुए संदेश देना आरम्भ किया, और आरम्भ से ही हमें इस बात का संकेत मिलता है कि उसका महत्वपूर्ण विषय क्या होगा। वह उन्हें बताता है कि यदि उनमें कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं तो वे धन्य हैं, क्योंकि वे विशेषताएं स्वर्ग जाने वालों के लिए हैं। इस संदेश का संपूर्ण विषय यह होगा–*केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।* मत्ती 5:3–12 में पाई जाने वाली धन्यवादियां (आशीर्वचन) इस विषय से बंधे हैं।

यीशु ने धन्य लोगों में पाए जाने वाले भिन्न गुणों की गणना की, और उसने उनके लिए असंख्य विशिष्ट आशीषों की प्रतिज्ञा भी की है। अनियमित पाठक प्रायः यह मानते हैं कि प्रत्येक मसीही को स्वयं को केवल एक धन्यवादी में ढूंढना चाहिए। तथापि, सावधान रहनेवाले पाठक यह जानते हैं कि यीशु उन कई तरह के विश्वासियों की सूची नहीं दे रहा था जो विविध आशीषों को प्राप्त करने पर थे, बल्कि *सभी सच्चे विश्वासियों* की जो उस एक भावी आशीष को प्राप्त करेंगे: स्वर्ग के राज्य की मीरास। उसके शब्दों की व्याख्या करने का कोई और बौद्धिक तरीका नहीं है:

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे।
धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।
धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
धन्य हो तुम, जब मुनष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल-बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था (मत्ती 5:3–12)।

आशीषें और चारित्रिक गुण

The Blessings and Character Traits

आइये, सबसे पहले प्रतिज्ञा की गई सभी आशीषों पर विचार करें। यीशु ने कहा कि धन्य (आशीषित) निम्न को प्राप्त करेंगे (1) स्वर्ग के राज्य के वारिस होंगे (2) शांति पाएंगे (3) पृथ्वी के अधिकारी होंगे (4) तृप्त किये जाएंगे (5) दया की जाएगी (6) परमेश्वर को देखेंगे (7) परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे, और (8) स्वर्ग के राज्य के वारिस होंगे (पद # 1 की पुनरावृत्ति)।

क्या यीशु हमें यह विचार कराना चाहता है कि केवल मन के दीन और धर्म के

कारण सताए जाने वाले ही स्वर्ग के राज्य के अधिकारी होंगे? क्या केवल शुद्ध हृदय वाले ही परमेश्वर को देखेंगे और केवल मेल करवाने वाले ही परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे, या उनमें से कोई भी परमेश्वर के राज्य का अधिकारी नहीं होगा? क्या मेल करवानेवाले दया को प्राप्त नहीं करेंगे और दया करनेवाले क्या परमेश्वर के पुत्र नहीं कहलाएंगे? निस्संदेह, ये सभी गलत निष्कर्ष होंगे। इसी कारण केवल यह परिणाम निकालना सुरक्षित है कि प्रतिज्ञा की गई बहुत सी आशीषें-एक बड़ी आशीष परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने-के विविध रूप हैं।

आइये, अब यीशु द्वारा बताई गई विविध विशेषताओं पर विचार करें (1) मन के दीन, (2) शोक करना, (3) नम्रता, (4) धार्मिकता की भूख, (5) दयावन्त, (6) मन के शुद्ध, (7) मेल करवाना, और (8) सताया जाना।

क्या यीशु हमें यह विचार कराना चाहता है कि एक व्यक्ति *दयावन्त न होते हुए भी मन से शुद्ध* हो सकता है? क्या कोई *धार्मिकता के लिए सताए जाने* पर भी *धर्म का भूखा और प्यासा नहीं हो सकता है?* पुनः, निस्संदेह नहीं। आशीषितों के अधिकांश चारित्रिण गुण, कुछ मात्रा में, *सभी* आशीषितों के द्वारा बताए गए विविध गुण हैं।

स्पष्ट है कि धन्यवादियां यीशु के सच्चे अनुयायियों के चारित्रिक गुणों को बताती है। अपने शिष्यों के लिए उन गुणों की गणना करने के द्वारा, यीशु उन्हें आश्वस्त करता है कि वे वो धन्य लोग हैं जो बचाए गए हैं और एक दिन स्वर्ग का आनन्द लेंगे। वर्तमान समय में, वे अपने दुखों के कारण स्वयं को इतने आशीषित अनुभव न कर रहे हों, और संसार उन्हें आशीषित के रूप में न देख रहा हो, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में वे ऐसे ही थे।

यीशु के विवरण में सही *न* बैठने वाले लोग धन्य नहीं है और वे स्वर्ग के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। प्रत्येक शिष्य-निर्माण करनेवाला पास्टर अपने झुण्ड को इस बारे में बताने के लिए बाध्य होता है।

आशीषितों के चारित्रिक गुण
The Character Traits of the Blessed

आशीषितों के आठ गुण कुछ मात्रा में व्याख्या के विषय हैं। उदाहरण के लिए, 'मन के दीन' होने में अच्छा क्या है? मैं यह सोचता हूं कि यीशु उस प्रथम आवश्यक गुण के बारे में बता रहा है जो एक व्यक्ति में उद्धार पाने के लिए होना ज़रूरी है—उसे अपनी स्वयं की आत्मिक दरिद्रता के बारे में पता होना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को उद्धार पाने से पूर्व अपने लिए उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता को देखना चाहिए, और यीशु के श्रोताओं में इस तरह के लोग थे जिन्होंने केवल अपनी दयनीयता के बारे में नहीं जाना था। वे इस्राएल में रहने वाले उन लोगों की तुलना में घमण्ड में इतने आशीषित थे कि अपने पापों से अंधे थे।

यह प्रथम गुण उद्धार की सभी आत्म-पर्याप्तता और उसे अर्जित करने के विचार को हटाता है। सच में आशीषित व्यक्ति वह है जो यह मानता है कि उसके पास परमेश्वर को देने के लिये कुछ नहीं है और यह कि उसकी अपनी धार्मिकता ''मैले चिथड़ों'' के समान है (यशा. 64:6)।

यीशु ने यह नहीं चाहा कि कोई भी यह सोचे कि वह धन्य होने के गुणों को पा सकता है। नहीं, लोग आशीषित हैं, अर्थात्, यदि उनमें आशीषित होने की विशेषताएं हैं तो वे *परमेश्वर के द्वारा आशीषित हैं।* यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से आता है। यीशु जिन धन्य लोगों के बारे में बोल रहा था, ये वही धन्य लोग थे, न केवल इस कारण कि स्वर्ग में कुछ चीज़ उनकी प्रतीक्षा में थी बल्कि उस कारण से जो परमेश्वर ने पृथ्वी पर उनके जीवनों में किया था। जब मैं अपने जीवन में आशीषित या धन्य होने के गुणों को देखता हूं, तो यह मुझे वह स्मरण कराने वाला नहीं होना चाहिए जो मैंने किया, बल्कि उसे, जो परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के द्वारा मुझमें किया है।

शोक करना
The Mournful

यदि पहली विशेषता को इस कारण सूचीगत किया गया है क्योंकि यह स्वर्ग जानेवालों का पहला आवश्यक गुण है, तो संभवत: दूसरे गुण को यो अर्थ सहित सूचीगत किया गया है: ''धन्य हैं वे जो शोक करते हैं'' (मत्ती 5:4)। क्या यीशु भीतरी पश्चात्ताप और अनुताप का वर्णन कर रहा है? मेरा ऐसा सोचना है, विशेषकर चूंकि पवित्रशास्त्र इस बारे में स्पष्ट है कि ईश्वरीय दुख का परिणाम पश्चात्ताप के रूप में होता है जो उद्धार के लिए ज़रूरी है (देखें 2 कुरि. 7:10)। एक बार यीशु जिस शोकित चुंगी लेने वाले से बोला था वह इस तरह के धन्य व्यक्ति का एक उदाहरण है। उसने दीनता के साथ अपने सिर को मन्दिर में झुकाया और उसने छाती पीट पीटकर परमेश्वर की करुणा के लिए पुकारा। उसके पास खड़े फरीसी से विपरीत, जिसने प्रार्थना करते हुए परमेश्वर को घमण्ड के साथ स्मरण कराया कि वह दशवांश देता और सप्ताह में दो बार उपवास करता है, चुंगी लेनेवाला अपने पापों से क्षमा प्राप्त कर वहां से गया। इस कहानी में, चुंगी लेनेवाला धन्य था; फरीसी नहीं (देखें लूका 18:9-14)। मुझे संदेह है कि यीशु के श्रोताओं में कुछ ऐसे भी थे जो पवित्र आत्मा के अधीन शोक कर रहे थे। पवित्र आत्मा की ओर से उन्हें शीघ्र ही सांत्वना मिलेगी!

यदि यीशु एक पश्चात्तापी व्यक्ति के आरम्भिक शोक का वर्णन नहीं कर रहा था जो अभी-अभी परमेश्वर के पास आया है, तब संभवत: वह सभी सच्चे विश्वासियों के दुख के बारे में बता रहा था जो लगातार एक ऐसे संसार का सामना करते हैं जो उस परमेश्वर के विद्रोह में है जो कि उनसे प्रेम करता है। पौलुस इसे इस तरह से कहता है, ''मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता है'' (रोमि. 9:2)।

नम्र

The Gentle

पवित्रशास्त्र में तीसरी विशेषता-नम्रता-को आत्मा के फलों में से एक के रूप में सूचीगत किया गया है (देखें गल. 5:22-23)। नम्रता एक स्व-उत्पादित गुण नहीं है। परमेश्वर के अनुग्रह और आत्मा के वास को प्राप्त करने वाले नम्र बनाए जाने के लिए भी धन्य हैं। एक दिन वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे, क्योंकि केवल धर्मी ही परमेश्वर द्वारा बनाई गई नई पृथ्वी पर वास करेंगे। दिखावा करने वाले मसीही जो कि कठोर और हिंसक हैं उन्हें सावधान रहना चाहिए। वे धन्य लोगों में से नहीं हैं।

धार्मिकता की भूख

Hungering for Righteousness

चौथी विशेषता-धार्मिकता-के लिए भूखे और प्यासे होना, परमेश्वर प्रदत्त भीतरी इच्छा के बारे में बताती है कि प्रत्येक सच में नया जन्म प्राप्त व्यक्ति इसका स्वामी होगा। वह संसार में फैली और अपने में पाई जाने वाली अधार्मिकता से दुखी होता है। वह पाप से घृणा (देखें भजन. 97:10; 119:128,163) और धार्मिकता से प्रेम करता है।

जब भी हम पवित्रशास्त्र में *धार्मिकता* शब्द के बारे में पढ़ते हैं, तब उसी क्षण हम इसका अनुवाद इस तरह से करते हैं, ''मसीह द्वारा हममें डाली गई धार्मिकता की वैद्य समझ,'' लेकिन इसका अर्थ हमेशा ऐसा नहीं होता है। प्राय: इसका अर्थ होता है, ''परमेश्वर के मानदण्ड से धार्मिकता के अनुसार जीवन जीने की विशिष्टता।'' निस्संदेह यीशु का अभिप्राय भी यहां यही था, क्योंकि एक मसीही को उस किसी चीज़ के लिए भूखा होने की ज़रूरत नहीं है जो पहले से ही उसके पास है। जिनका जन्म आत्मा में हुआ है वे अधिक समय तक धार्मिकता में *जीवन बिताते* हैं, और उन्हें आश्वासन होता है कि वे ''तृप्त होंगे'' (मत्ती 5:6), निश्चय ही वही परमेश्वर, अपने अनुग्रह के द्वारा उस कार्य को पूरा करेगा जिसका आरम्भ उसने उनमें किया है (देखें फिलि. 1:6)।

यीशु के शब्द यहां नई पृथ्वी के समय का भी अनुमान लगाते हैं, एक ऐसी पृथ्वी जिसमें धर्मी वास करते हैं (2 पत. 3:13)। वहां कोई पाप नहीं होगा। हर कोई संपूर्ण मन से परमेश्वर से प्रेम करेगा तथा अपने समान अपने पड़ोसी से प्रेम करेगा। वे, जो कि आज धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, तब तृप्त किये जाएंगे। अन्तत: हमारे द्वारा की जाने वाली प्रार्थना का पूरा-पूरा जवाब मिलेगा, ''तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो'' (मत्ती 6:10)।

दयालु
The Merciful

पांचवां गुण-दया करना, प्रत्येक नया जन्म प्राप्त व्यक्ति स्वभाविक रूप से इसे अपने भीतर वास करने वाले दयालु परमेश्वर की ओर से पाता है। जो दया नहीं करते, वे धन्य नहीं हैं और वे यह प्रगट करते हैं कि वे परमेश्वर के अनुग्रह के सहभागी नहीं हैं। प्रेरित याकूब इससे सहमत होते हुए कहता है : ''क्योंकि जिसने दया नहीं की उसका न्याय बिना दया के होगा'' (याकू. 2:19)। यदि कोई परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होकर एक दया न करने वाले न्याय को प्राप्त करता है, तो आपके विचार से क्या वह स्वर्ग जाएगा या नरक?[36] जवाब संभावित है।

यीशु ने एक बार उस दास की कहानी सुनाई जिसने अपने स्वामी की ओर से बड़ी दया को प्राप्त किया, लेकिन उसने अपने अधीनस्थ दास पर दया नहीं दिखाई। जब उसके स्वामी को इस बारे में पता चला उसने ''उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज़ा न भर दे, तब तक उनके हाथ में रहे'' (मत्ती 18:34)। उसके पहले क्षमा किये गए कर्ज़ को फिर से लागू कर दिया गया। यीशु ने अपने शिष्यों को चेतावनी देते हुए कहा ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा'' (मत्ती 18:35)। अत:, मसीह में उस किसी भाई बहन को क्षमा करने से इन्कार करना जो क्षमा पाना चाहता है, हमारे पहले क्षमा किये गए पापों को हम पर लागू करता है। परिणामस्वरूप हमें तब तक दण्ड देनेवालों के हाथों में सौंप दिया जाता है जब तक कि हम उस कर्ज़ को चुकता न कर दें जिसे हम कभी चुका नहीं सकते हैं। पुन:, दया न करने वाले लोगों पर परमेश्वर की ओर से दया नहीं की जाएगी। वे धन्य लोगों में से नहीं हैं।

मन के शुद्ध होना
The Pure in Heart

स्वर्ग जानेवाले के लिए छठा गुण मन का शुद्ध होना है अधिकांश दिखावा करने वाले मसीहियों के विपरीत, मसीह के सच्चे अनुयायी केवल बाहर से ही पवित्र नहीं होते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, उनके मनों को शुद्ध बनाया गया है। वे अपने मन से सच में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, इसका प्रभाव उनके उद्देश्यों, विचारों पर पड़ता है। यीशु ने प्रतिज्ञा की कि वे परमेश्वर को देखेंगे।

क्या मैं फिर से पूछ सकता हूं, क्या हमें यह विश्वास करना है कि ऐसे सच्चे

36. रोचक है, याकूब की पुस्तक में अगला पद है,'' हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?

मसीही विश्वासी हैं जिनके मन शुद्ध *नहीं* हैं और इसी कारण वे परमेश्वर को *नहीं* देखेंगे? क्या परमेश्वर उनसे इस तरह से कहेगा, ''तुम स्वर्ग में तो आ सकते हो, लेकिन तुम मुझे देख नहीं सकते?'' नहीं, निस्संदेह *प्रत्येक* सच्चे स्वर्ग जाने वाले व्यक्ति का शुद्ध मन होता है।

मेल कराना

The Peacemakers

सूची में अगले मेल कराने वाले हैं। वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। पुन:, यीशु अवश्य ही मसीह के प्रत्येक सच्चे अनुयायी के बारे में बता रहे हैं, क्योंकि मसीह में विश्वास रखनेवाला प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर का पुत्र है। (देखें गल. 3:26)।

आत्मा में जन्म लेनेवाले तीन तरह से मेल कराने वाले हैं:

सर्वप्रथम, उनका परमेश्वर के साथ मेल हुआ है, जो कि एक समय उसके बैरी थे (देखें रोमि. 5:10)।

दूसरा, जितना अधिक हो सके, वे दूसरे लोगों के साथ मेल से रहते हैं। उनमें फूट और झगड़ा नहीं होता। पौलुस ने लिखा कि झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट व विधर्म करने वाले परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे (देखें गल. 5:19-21)। सच्चे विश्वासी झगड़े से बचने और संबन्धों में रहने के लिए एक मील अतिरिक्त जाएंगे। वे अपने भाई के साथ मेल रखे बिना परमेश्वर के साथ मेल रखने का दावा नहीं करते (देखें मत्ती 5:23-24; 1 यूह. 4:20)

तीसरा, सुसमाचार बांटने के द्वारा, मसीह के सच्चे अनुयायी दूसरों की परमेश्वर तथा अपने सह-व्यक्ति के साथ मेल रखने में सहायता भी करते हैं। संभवत: पहाड़ी संदेश के इस विशिष्ट पद के बारे में ही याकूब ने लिखा है : ''और मिलाप कराने वालों के लिए धार्मिकता का फल मेल-मिलाप के साथ बोया जाता है'' (याकू. 3:18)।

सताया जाना

The Persecuted

अन्त में, यीशु ने धार्मिकता के कारण सताए जाने वालों को *धन्य* कहा। निस्संदेह, वह उन लोगों के बारे में बोल रहा था जो धार्मिकता के साथ *जीवन बिताते* हैं, न कि उनके बारे में जो यह *सोचते* हैं कि मसीह की धार्मिकता को उनमें डाला गया है। मसीह की आज्ञाओं का पालन करने वाले लोग गैर विश्वासियों द्वारा सताए जाते हैं। वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।

यीशु किस तरह के सताव के बारे में बोल रहा था? उत्पीड़न? शहीदी? नहीं, वह विशिष्ट रूप से उसके कारण अपमानित होने या अपमानजनक शब्द बोले जाने के

बारे में बोल रहा था। यह पुन: संकेत देता है कि एक व्यक्ति के सच्चे मसीही होने पर ही गैर विश्वासियों के लिए यह संभव होता है, अन्यथा गैर विश्वासी उसके बारे में कभी भी बुरी चीज़ें नहीं कहेंगे। कितने तथाकथित मसीही ऐसे हैं जो गैर विश्वासियों के समान होते हैं। इसी कारण एक भी गैर विश्वासी उनके विरोध में कुछ भी नहीं कहता। वे वास्तव में मसीही हैं ही नहीं। जैसा यीशु ने कहा, ''हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उनके बापदादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा किया करते थे'' (लूका 6:26)। जब सभी आपके बारे में अच्छा कहें, तो यह आपके झूठे विश्वासी होने का चिन्ह है। संसार सच्चे मसीहियों से घृणा करता है (यूह. 15:18-21; गल. 4:29; 2 तीमु. 3:12; 1 यूह. 3:13-14 भी देखें)।

नमक और ज्योति

Salt and Light

एक बार यीशु ने अपने आज्ञाकारी शिष्यों को आश्वस्त किया कि वे निश्चय ही उन रूपान्तरित व धन्य लोगों में से थे जिन्हें स्वर्ग का अधिकारी होने के लिए नियुक्त किया गया था, तौभी उसने उन्हें चेतावनी का वचन दिया। बहुत से आधुनिक प्रचारकों से विपरीत जो लगातार आत्मिक बकरियों को आश्वासन देते रहते हैं कि उन्हें जो उद्धार मिला है वे उससे कभी वंचित नहीं हो सकते, यीशु ने अपने शिष्यों से इतना अधिक प्रेम किया कि उसने उन्हें चिताया कि वे धन्य लोगों की श्रेणी में से अलग भी हो सकते हैं।

> तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं; केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें (मत्ती 5:13-16)।

इस पर ध्यान दें कि यीशु ने अपने शिष्यों को नमक या ज्योति *बनने* के लिए प्रेरित नहीं किया। उसने (अलंकारिक रूप में) कहा कि वे पहले से ही नमक *थे*, और उसने उन्हें नमकीन *बने रहने* को प्रेरित किया। उसने (अलंकारिक रूप में) कहा कि वे पहले से ही ज्योति *थे*, और उसने उन्हें अपनी ज्योति को छिपाने को प्रेरित नहीं किया, बल्कि लगातार चमकने को। यह उन दिखावा करने वाले मसीहियों के विपरीत कैसे खड़ा होता है जिन्हें उनके नमक और ज्योति *बनने* के लिए कई संदेशों

को दिया गया है। यदि लोग पहले से ही नमक और ज्योति नहीं हैं तो वे मसीह के शिष्य भी नहीं हैं। वे धन्य लोगों में से नहीं हैं। वे स्वर्ग नहीं जानेवाले हैं।

यीशु के समय में, नमक का प्रयोग प्राथमिक रूप में मांस की सुरक्षा के लिए किया जाता था। मसीह के आज्ञाकारी अनुयायी होने के कारण, हमें इस पापी संसार से स्वयं को सड़न व भ्रष्टता से सुरक्षित रखना है। लेकिन यदि हम संसार के समान व्यवहार करते हैं, तो हम सच में ''किसी काम के नहीं रह जाते हैं'' (पद 13)। यीशु ने धन्य लोगों को नमकीन बने रहने की चेतावनी दी, अपनी अद्वितीय विशेषताओं को सुरक्षित रखते हुए। उन्हें अपने चारों ओर के संसार से दूर बने रहना चाहिए ताकि वे 'नमकरहित' होकर ''फेंके और पैरों के तले रौंदे न जाए।'' यह नये नियम में धर्म का त्याग करने वालों के विरोध में दी जाने वाली चेतावनियों में से यह एक है। यदि नमक सच में नमक है तो वह नमकीन होगा। इसी तरह से यीशु के अनुयायी यीशु के अनुयायियों के समान कार्य करते हैं, अन्यथा वे यीशु के अनुयायी नहीं हैं; चाहे वे पहले रह भी चुके हों।

मसीह के सच्चे अनुयायी जगत की ज्योति भी हैं। ज्योति *हमेशा* चमकती है। यदि वह चमक नहीं रही है, तो यह ज्योति नहीं है। इस समीक्षा में ज्योति हमारे भले कार्य को प्रस्तुत करती है (देखें मत्ती 5:16)। यीशु उन्हें प्रेरित नहीं कर रहा था जिनके पास ढोल बजाने के कार्य नहीं थे, बल्कि उन्हें प्रेरित कर रहा था जिनके पास दूसरों से अपनी भलाई न छिपाने को अच्छे कार्य थे। ऐसा करते हुए, वे अपने स्वर्गीय पिता को महिमा देंगे क्योंकि उसी के कार्य उनमें उनकी भलाई का स्रोत हैं। यहां हम परमेश्वर के अनुग्रहकारी कार्य और उसके साथ हमारे सहयोग के एक सुन्दर संतुलन को देखते हैं; एक व्यक्ति को पवित्र होने के लिए इन दोनों की ही ज़रूरत है।

मसीह के अनुयायियों के लिए व्यवस्था का संबंध

The Law's Relationship to Christ's Followers

अब हम एक नए अनुच्छेद का आरंभ करते हैं। मसीह अपने शेष संदेश में परिचय के रूप में जो कुछ कहेगा, यह उसके अद्वितीय महत्व का प्रमुख विभाग है।

> यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों का लोप करने आया हूँ। लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाए, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिए जो कोई छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा वही स्वर्ग के

> राज्य में महान कहलाएगा, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश न करने पाओगे (मत्ती 5:17-20)

यदि यीशु ने अपने श्रोताओं को इस विचारधारा के विरुद्ध चेतावनी दी कि वह व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त कर रहा था, तब हम सुरक्षित रूप से यह परिणाम निकाल सकते हैं कि उसके श्रोताओं में से कुछ इस धारणा वाले थे। वे इस तरह की धारणा क्यों बना रहे थे जिसका केवल हम अनुमान ही लगा सकते हैं? *शायद* यह यीशु की उन विधिवादी शास्त्रियों और फरीसियों के लिए झिड़की थी जिन्होंने कुछ लोगों में इस विचार को डाला कि वह (यीशु) व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का नाश कर रहा था।

इसके अतिरिक्त, यीशु ने अपने शिष्यों को इस तरह की धारणा की कमी से अवगत कराना चाहा था। वह समस्त पुराने नियम का प्रेरक था इसलिए निश्चय ही वह उस प्रत्येक चीज़ का नाश नहीं कर रहा था, जिसे उसने मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था। इसके विपरीत वह अपने कहे अनुसार व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की *पूर्ति* करेगा।

वह किस तरह से व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति करेगा? कुछ का सोचना है कि यीशु केवल मसीह भविष्यवाणियों के पूरा होने के बारे में बोल रहा था। यद्यपि यीशु ने प्रत्येक मसीही भविष्यवाणी को निश्चय ही पूरा किया (या पूरा करेगा), तो भी उसके मस्तिष्क में यह सब नहीं था। स्पष्ट है, संदर्भ इस ओर संकेत देता है कि वह उस *सब* के बारे में भी बोल रहा था जो व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के बारे में लिखा गया था। व्यवस्था के बारे में छोटे-से-छोटा शब्द या मात्रा भी।

अन्यों का सोचना है कि यीशु का अभिप्राय इससे यह था कि वह हमारे लिए व्यवस्था के मार्गों को अपने आज्ञाकारी जीवन और त्यागपूर्ण मृत्यु के द्वारा पूरा करेगा (देखें रोमि. 8:4)। लेकिन संदर्भ यह भी प्रकट करता है कि उसके मस्तिष्क में ऐसा कुछ नहीं था। बाद के पदों में यीशु ने व्यवस्था को पूरा किये जाने के संबंध में अपने जीवन और मृत्यु के बारे में कुछ नहीं बताया। इसके विपरीत, अगले ही वाक्य में उसने कहा कि "जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।" उसने बाद में यह भी बताया कि इसके प्रति लोगों का रवैया स्वर्ग में उनके स्थान को भी प्रभावित करेगा (पद 19), और यह भी कि लोगों को फरीसियों और शस्त्रियों की तुलना में व्यवस्था का पालन और भी अच्छी तरह से करना चाहिए, नहीं तो वे स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाएंगे (पद 20)।

निस्संदेह, मसीही भविष्यद्वाणियों, किस्मों और व्यवस्था की छाया के पूरा होने के साथ-साथ हमारे लिए व्यवस्था की मांगों को पूरा करने पर यीशु अपने श्रोताओं के व्यवस्था के नियमों को *पूरा करने* और भविष्यद्वक्ताओं के कहे अनुसार *करने* पर भी विचार कर रहा था। एक भाव में, यीशु परमेश्वर के सत्य को प्रगट करने और पूरे रूप में इसका अर्थ बताने, इसकी व्याख्या करने और उसे पूरा करने के द्वारा व्यवस्था को पूरा करेगा, जिसकी उसके श्रोताओं में समझने में कमी थी।[37] पद 17 में अनुवादित शब्द *पूरा होने* का प्रयोग नया नियम में *पूरा होने, समाप्त होने और भरे जाने* के रूप में भी किया गया है। यीशु को चार वाक्यों को आरम्भ करने के पश्चात् यही करना था।

नहीं, यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आया था, अर्थात् ''उन्हें पूरा करने के लिए।'' पहाड़ी संदेश के इस भाग का प्रचार करते समय मैं परमेश्वर के प्रकाशन के उदाहरण के रूप में जिसे परमेश्वर ने व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को दिया- दिखाने के लिए प्राय: प्रत्येक को आधे गिलास पानी को दिखाता हूं। यीशु व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का नाश करने के लिए नहीं आया था (ऐसा कहते हुए, मैं गिलास के पानी को मानो फेंकने का अभिनय करता हूं)। इसके विपरीत, उसने व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को *पूरा* किया (इस समय मैं एक पानी से भरी बोतल से उस गिलास को पानी से मुंहामुंह तक भर देता हूं)। इससे लोगों को यीशु के अभिप्राय को समझने में सहायता मिलती है।

व्यवस्था को पूरा करने का महत्व
The Importance of Keeping the Law

व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता में पाई जाने वाली आज्ञाओं के संबन्ध में यीशु अपने विषय को बलपूर्वक नहीं देता। उसने अपने शिष्यों से उनका आज्ञापालन करने की अपेक्षा की थी। वे हमेशा के समान महत्वपूर्ण थीं। वास्तव में, उनके द्वारा आज्ञाओं

37. ''व्यवस्था का विधिवादी पहलू'' और उसी के साथ-साथ ''व्यवस्था का नैतिक पहलू'' के रूप में उल्लेख किये जाने वाले के लिए यह सत्य होगा, यद्यपि विधिवादी व्यवस्था को पूरा, करने के संबंध में उसका पूर्ण स्पष्टीकरण पवित्र आत्मा द्वारा उसके प्रेरितों को उसके पुनरुत्थान के पश्चात दिया गया। अब हम समझ गए हैं कि नई वाचा के अन्तर्गत पशु बलि करने की आवश्यकता क्यों नहीं है, क्योंकि यीशु परमेश्वर का मेमना था। न ही हमें पुराने नियम के भोजन संबन्धी नियम के अनुसार चलने की ज़रूरत है, क्योंकि सभी तरह के भोजन को शुद्ध ठहराया है (देखें मर 7:19)। हमें एक पार्थिक महायाजक की मध्यस्थता की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अब यीशु हमारा महायाजक है। तथापि, विधिवादी व्यवस्था के प्रतिकूल नैतिक व्ययवस्था के किसी भी भाग को, यीशु की मृत्यु से पूर्व या उसके पुनरुत्थान के पश्चात्, उसके द्वारा कही व की गई किसी चीज़ में कोई काट-छांट नहीं की गई। इसके विपरीत, यीशु ने परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का विस्तार किया, जैसा प्रेरितों ने उसके पुनरुत्थान के पश्चात् आत्मा की प्रेरणा से किया था। मूसा की व्यवस्था के नैतिक पहलू मसीह की व्यवस्था से जुड़े हैं, जो नई वाचा की व्यवस्था है। स्मरण रखें कि यीशु उन दिनों के मूसा की व्यवस्था में रहनेवाले यहूदियों से बोल रहा था। अत: मत्ती 5:17-20 में उसके द्वारा कहे गए शब्दों को नये नियम में उसके जारी रहने वाले प्रकाशन की रोशनी में अनुवादित किये जाने की ज़रूरत है।

को महत्व दिया जाना स्वर्ग में उनके स्थान को निर्धारित करेगा, ''इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा; वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा'' (5:19)।

तत्पश्चात् हम पद 20 पर आते हैं : ''क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।''

ध्यान दें कि यह एक नया विचार नहीं है, बल्कि यह एक परिणाम निकाला गया कथन है जो कि पिछले पदों से 'संयोजक' *क्योंकि* द्वारा जुड़ा हुआ है। आज्ञाओं को पूरा करना कितना महत्वपूर्ण है? *एक व्यक्ति को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए उनका पालन फरीसियों और शास्त्रियों से अधिक अच्छे तरीके से करना चाहिए।* पुन:, हम देखते हैं कि यीशु अपने विषय को पूरा कर रहा था–*केवल पवित्र ही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे।*

एक शिष्य निर्माण करने वाला सेवक उस किसी को भी उद्धार रखने का आश्वासन नहीं दे सकता जिसकी धार्मिकता फरीसियों और शास्त्रियों से बढ़कर न हो।

यीशु किस तरह की धार्मिकता के बारे में बोल रहा था?
Of What Kind of Righteousness Was Jesus Speaking?

जब यीशु ने कहा, कि हमारी धार्मिकता फरीसियों और शास्त्रियों से बढ़कर होनी चाहिए, तो क्या वह धर्मिकता की वैद्य समझ को संक्षिप्त नहीं कर रहा था जिसे एक नि:शुल्क उपहार के रूप में हममें डाला जाएगा? नहीं, वह ऐसा नहीं कर रहा था। सर्वप्रथम, संदर्भ की यह व्याख्या सही नहीं बैठती। इस कथन से पहले और बाद में (और पूरे पहाड़ी संदेश में), यीशु आज्ञाओं को पूरा करने के बारे में बोल रहा था, अर्थात् धार्मिकता से रहने के बारे में। उसके वचनों की सबसे स्वभाविक व्याख्या यह है कि हमें शास्त्रियों और फरीसियों की तुलना में अधिक धार्मिकता के साथ *रहना* चाहिए। यह सोचना कितना हास्यजनक होगा कि यीशु शास्त्रियों और फरीसियों को एक ऐसे मानदण्ड पर रख रहा था जिस पर वह अपने स्वयं के शिष्यों को नहीं रख रहा था। यह विचार करना कितना मूर्खतापूर्ण होगा कि यीशु शास्त्रियों और फरीसियों को उन पापों को करने के कारण दण्डित करेगा जिनके लिये वह अपने शिष्यों को 'उद्धार की प्रार्थना'' किये जाने कारण दण्डित नहीं करेगा।[38]

38. यदि यीशु एक थोपी गई, कानूनी धार्मिकता के बारे में बोल रहा था जिसे हम उस पर विश्वास करने के द्वारा प्राप्त करते हैं, तो उसने इस ओर संकेत क्यों नहीं दिया? उसने इस तरह की चीज़ को क्यों कहा जिसका वे अशिक्षित लोग अर्थ लगा सकते थे जिनसे वह बोल रहा था, जिन्होंने कभी यह अनुमान नहीं लगाया था कि वह थोपी गई धार्मिकता के बारे में बोल रहा था?

हमारी समस्या यह है कि हम पद के सही अर्थ को ग्रहण करना नहीं चाहते हैं, क्योंकि यह हमसे कर्मकाण्डवाद के रूप में बोलता है। लेकिन हमारी वास्तविक समस्या यह है कि हम थोपी गई धार्मिकता और व्यावहारिक धार्मिकता के बीच एक अविच्छेद सह यूह सम्बद्धता को नहीं समझते हैं। तौभी, प्रेरित के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उसकी नाईं धर्मी है (1 यूह. 3:7)। और न ही हम यूहन्ना के समान नये जन्म और व्यावहारिक धार्मिकता के बीच की सहसंबद्धता को समझते हैं ''जो कोई धर्म का काम करता है, वह उससे जन्मा है'' (1 यूह. 2:29)।

यीशु 5:20 के अपने कथन में इस तरह से जोड़ सकता था ''और यदि तुम पश्चात्ताप करो, और सच में नया जन्म प्राप्त करते हो, और जीवित विश्वास रखने के द्वारा मेरी ओर से धार्मिकता के नि:शुल्क उपहार को प्राप्त करते हो, तो तुम्हारे अन्दर मेरे वास करने वाली आत्मा की सामर्थ के साथ सहयोग करने के द्वारा, यह निश्चय ही शास्त्रियों और फरीसियों की तुलना में अधिक बढ़ती जाएगी।''

शास्त्रियों और फरीसियों की तुलना में अधिक पवित्र कैसे बनें

How to be Holier than the Scribes and Pharisees

मत्ती 5:20 में यीशु के कथन के जवाब में उठने वाला स्वभाविक प्रश्न है : शास्त्री और फरीसी वास्तव में कितने धर्मी थे? जवाब है : *अधिक नहीं।*

एक अन्य अवसर पर यीशु ने उन्हें कहा, ''तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दो की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं'' (मत्ती 23:27)। अर्थात्, वे बाहर से तो धर्मी दिखते थे, लेकिन भीतर से बुरे थे। उन्होंने व्यवस्था के *अक्षरों* को पूरा करने का तो महान कार्य किया था, लेकिन उन्होंने इसकी *मंशा* की उपेक्षा की थी, सामान्यता स्वयं को सही ठहराते या परमेश्वर की आज्ञाओं में फेर-बदल करते हुए।

फरीसियों और शास्त्रियों का यह तात्विक प्रवाह वास्तव में, पहाड़ी संदेश के शेष भाग में यीशु का प्रमुख केन्द्र रहा था। हम पाते हैं कि उसने परमेश्वर की चिर-परिचित असंख्य आज्ञाओं को उद्धृत किया, और प्रत्येक उद्धरण के पश्चात्, अक्षरों को पूरा करने और व्यवस्था की मंशा को पूरा करने के बीच के अन्तर को प्रगट किया। ऐसा करते हुए उसने बार-बार शास्त्रियों और फरीसियों की झूठी शिक्षा और पाखण्ड को उद्घाटित किया और अपने शिष्यों के लिए अपनी सच्ची अपेक्षाओं को भी प्रगट किया।

यीशु ने प्रत्येक उदाहरण का आरम्भ इन शब्दों से किया, ''तुम सुन चुके हो।'' वह उन लोगों से बोल रहा था जिन्होंने संभव है कि पहले कभी पढ़ा नहीं था। उन्होंने शास्त्रियों और फरीसियों को आराधनालय में पुराने नियम के चर्मपत्रों से केवल पढ़ते हुए ही सुना था। यह कहा जा सकता है कि उनके श्रोता अपने पूरे जीवन भर झूठी

शिक्षा में ही बैठे रहे थे, क्योंकि उन्होंने फरीसियों और शास्त्रियों को परमेश्वर की आज्ञाओं में फेर बदल करते व अपवित्र जीवन शैली व्यतीत करते देखा था।

शास्त्रियों और फरीसियों के विपरीत, एक दूसरे से प्रेम करें

Love Each Other, Unlike the Scribes and Pharisees

अपने प्रथम विषय के रूप में छठी आज्ञा का प्रयोग करते हुए, यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के लिए उनकी अपेक्षा को सिखाना आरम्भ किया, और इसी के साथ साथ उसने शास्त्रियों और फरीसियों के घमण्ड को भी प्रगट किया।

> तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि ''हत्या न करना, और ''जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा।'' और जो कोई अपने भाई को ''निकम्मा'' कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे ''अरे मूर्ख'' वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा (मत्ती 5:21-22)।

सर्वप्रथम, ध्यान दें कि यीशु किसी ऐसी चीज़ के बारे में चेतावनी दे रहा था जो किसी व्यक्ति के नरक जाने का कारण बन सकती है। उसका प्रमुख विषय था केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के *अधिकारी होंगे।*

शास्त्रियों और फरीसियों ने छठी आज्ञा को उद्धृत करते हुए हत्या के विरोध में प्रचार किया, साथ ही साथ यह चेतावनी देते हुए कि हत्या एक व्यक्ति को न्यायालय में भी लेकर जा सकती है।

तथापि, यीशु ने अपने शिष्यों को वह बताना चाहा जो फरीसी और शास्त्री नहीं जान पा रहे थे- वहां बहुत ''कम'' उल्लंघन थे जिसके कारण कोई व्यक्ति न्यायालय जा पाता, *परमेश्वर के न्यायालय* में भी। क्योंकि हमारे लिए एक दूसरे को प्रेम करना बहुत महत्वपूर्ण है (दूसरी बड़ी आज्ञा), एक भाई से नाराज़ हो जाने पर हमें स्वयं को दोषी पाते हुए परमेश्वर के न्यायालय में मौजूदगी का अनुभव करना चाहिए। यदि हम अपने क्रोध को उसके प्रति क्रूर शब्दों के द्वारा व्यक्त करते हैं, हमारा उल्लंघन पहले से भी अधिक गंभीर हो जाता है, और हमें इसके लिए स्वयं को परमेश्वर के सर्वोच्च न्यायालय में दोषी के रूप में देखना चाहिए। और यदि हम इससे आगे जाएं, अपने भाई से घृणा कर उसके लिए गलत उच्चारण करते हुए, हम परमेश्वर के सम्मुख नरक में डाले जाने योग्य दोषी हो जाते हैं।[39] यह गंभीर है।

---

39. यह मसीह में हमारे भाई बहनों के साथ हमारे संबन्ध पर लागू होता है। यीशु ने इस तरह के धार्मिक अगुवों को मूर्ख कहा (देखें नीति. 1:7; 13:20)।

परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध को हमारे भाई के साथ हमारे संबन्ध के रूप में मापा जाता है। यदि हम एक भाई से घृणा करते हैं, तो यह प्रगट करता है कि हम अनन्त जीवन के अधिकारी नहीं हैं। यूहन्ना ने लिखा,

> जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता (1 यूह. 3:15)।

> यदि कोई कहे कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता (1 यूह. 4:20)।

हमारे लिए एक दूसरे को प्रेम करना कितना अधिक महत्वपूर्ण है, और जैसे यीशु ने आज्ञा दी, मेल-मिलाप के लिए कार्य करना भी- जब हम एक दूसरे के साथ अपराध करते हैं (देखें मत्ती 18:15-17)।

यीशु ने आगे कहा:

> इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे। और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा (मत्ती 5:23-24)।

इसका अर्थ यह है कि यदि हमारा संबन्ध हमारे भाई के साथ सही नहीं है, तो हमारा संबन्ध परमेश्वर के साथ भी सही नहीं है। फरीसी छोटी चीज़ों को बड़ा बनाने तथा बड़ी चीज़ों को निम्न करने के दोषी थे, ''तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो'' यीशु ने ऐसा कहा (मत्ती 23:23-24)। उन्होंने दशवांश और भेंट देने के महत्व पर बल दिया, लेकिन उसकी उपेक्षा की जो *सबसे* अधिक महत्वपूर्ण था, अर्थात् एक दूसरे से प्रेम करने की दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा का। परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को दिखाते हुए भेंट को लाना और उसी समय में उसकी दूसरी महत्वपूर्ण आज्ञा का उल्लंघन करना कितना पाखण्डपूर्ण है। यीशु ने इसी के विरुद्ध चेतावनी दी थी।

न्यायालय की कठोरता के विषय पर यीशु ने आगे कहा:

> जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले, कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौड़ी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा (मत्ती 5:25-26)।

परमेश्वर के न्यायालय से बाहर अपने भाई के साथ जहां तक संभव हो सके शांति के साथ रहना अच्छा है। यदि एक भाई या बहन हम से नाराज़ हो और हम ज़िद में आकर उससे मेल करने से इंकार कर दें जब कि ''परमेश्वर के न्यायालय के मार्ग पर हों'' अर्थात् हम अपने जीवन की यात्रा में परमेश्वर के सम्मुख खड़े होकर दुखी ही होंगे। यीशु ने यहां जो कुछ भी कहा वह मत्ती 18:23-35 के क्षमा न करने वाले दास के समान ही है। वह सेवक जिसने स्वयं क्षमा प्राप्त कर दूसरे को क्षमा करने से इंकार कर दिया था उस पर उसके ऋण को फिर से लाद दिया गया, और उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया गया ''जब तक कि वह सारा कर्ज़ न भर दे'' (मत्ती 18:34)। यहां यीशु परमेश्वर की अपेक्षानुसार अपने भाई से प्रेम न करने के भीषण अनन्त परिणामों की चेतावनी दे रहा है।

शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत यौन संबन्धों में शुद्ध बनें

Be Sexually Pure, Unlike the Scribes and Pharisees

सातवीं आज्ञा यीशु के दूसरे उदाहरण का विषय थी कि शास्त्रियों और फरीसियों ने कैसे अक्षरों को पूरा करते हुए व्यवस्था की उपेक्षा की। यीशु ने अपने शिष्यों से शास्त्रियों और फरीसियों की तुलना में यौन संबन्धों में अधिक शुद्ध होने की अपेक्षा की।

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि ''व्यभिचार न करना।'' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए (मत्ती 5:27-30)।

पुन: ध्यान दें कि यीशु अपने प्राथमिक विषय को पूरा कर रहा था- *केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।* उसने फिर से इस बारे में चेतावनी दी नरक और इससे बाहर रहने के लिए क्या करना चाहिए।

शास्त्री और फरीसी सातवीं आज्ञा की उपेक्षा नहीं कर सके, अत: उन्होंने बाहरी रूप से अपनी पत्नियों के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के द्वारा बाहरी रूप से इसका पालन किया। तौभी, वे दूसरी स्त्रियों से प्रेम करने की कल्पना करते थे। वे बाज़ार में स्त्रियों को देखकर मानसिक रूप में उन्हें अनावृत्त करते थे। वे हृदय से व्यभिचारी थे, और इस तरह से वे सातवीं आज्ञा की मंशा का उल्लंघन कर रहे थे। आज कलीसिया में कितने लोग इससे भिन्न नहीं हैं?

परमेश्वर ने निस्संदेह, लोगों के यौन रूप में पूरी तरह से शुद्ध होने की अपेक्षा

की। यदि अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन संबन्ध रखना गलत है तो उसके साथ यौन संबन्ध की कल्पना करना भी गलत है। मूसा की व्यवस्था में यीशु किसी कठोर नियम को नहीं जोड़ रहा था, वह तो उसमें पहले से ही था। दसवीं आज्ञा में स्पष्ट रूप में लालसा को वर्जित किया गया है : ''तू अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच न करना'' (निर्ग. 20:17)।

यीशु के श्रोताओं में क्या कोई इसका दोषी था? संभवत: वे दोषी थे। उन्हें क्या करना चाहिए था? उन्हें यीशु के निर्देश दिये जाने के एकदम बाद ही पश्चात्ताप करना चाहिए था। लालसा करने वालों को लालसा करने पर रोक लगानी चाहिए थी चाहे कुछ भी हो और कितनी भी कीमत क्यों न चुकानी पड़े क्योंकि लालसा करने वाले नरक में जाते हैं।

बेशक कोई भी समझदार व्यक्ति यीशु के वक्तव्य से यह नहीं सोचेगा कि लालसा करनेवाले लोगों को अपनी आंख निकाल लेनी चाहिए या फिर अपना हाथ काट देना चाहिए। अपनी एक आंख निकालकर लालसा करने वाला व्यक्ति एक आंख से लालसा करने वाला बन जाता है। यीशु नाटकीय रूप से सातवीं आज्ञा की मंशा का पालन किये जाने के महत्व पर बल दे रहा था। अनन्तता इस पर ही निर्भर है।

मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए शिष्य निर्माण करने वाला सेवक अपने शिष्यों को उस हर किसी चीज़ को ''काट डालने'' के लिए कहेगा जो उनके लिए ठोकर का कारण बनती है। यदि यह केबल टी.वी. है तो केबल को हटा देने की ज़रूरत है। यदि यह नियमित रूप से टी.वी. देखना है तो टी.वी. को हटा देने की ज़रूरत है। यदि यह पत्रिका की सदस्यता है तो उसे रद्द करने की ज़रूरत है। यदि यह इंटरनेट है, तो इसे हटा देना चाहिए। यदि यह खुली खिड़की है तो खिड़की को बन्द कर देना चाहिए। इनमें से किसी भी चीज़ का अनन्त जीवन बिताने के लिए कोई महत्व नहीं है, और शिष्य निर्माता सेवक के अपने झुण्ड से प्रेम करने के कारण वह उन्हें यीशु के समान सत्य को बताते हुए चेतावनी देगा।

व्यभिचार करने का दूसरा तरीका
Another Way to Commit Adultery

यीशु के अगले उदाहरण का उसके साथ अधिक संबन्ध है जिस पर हमने अभी अभी विचार किया है, इसी कारण इसे इसके एकदम बाद ही बताया गया है। इसे एक नये विषय की तुलना में एक अतिरिक्त विस्तार के रूप में देखना चाहिए। विषय है ''फरीसियों द्वारा व्यभिचार के समान की जाने वाली दूसरी चीज़।''

> यह भी कहा गया था, कि ''जो कोई अपने पत्नी को त्याग दे तो उसे त्यागपत्र दे।'' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई

> अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है, और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है (मत्ती 5:31-32)।

यहां इस बात का उदाहरण मिलता है कि फरीसी और शास्त्री अपनी पापी जीवन प्रणाली को पूरा करने के लिए परमेश्वर की व्यवस्था को कैसे घुमा देते थे।

आइये यीशु के दिनों के एक काल्पनिक फरीसी की रचना करते हैं। उसकी गली के दूसरी ओर एक खूबसूरत स्त्री रहती है जिसके प्रति वह लालसा करता रहता है। उसे प्रतिदिन देखने के द्वारा वह अपनी पत्नी को धोखा देता है। वह स्त्री भी उसके प्रति आकर्षित होती दिखती है, और उस फरीसी की अभिलाषा उसके प्रति बढ़ती जाती है। वह उसे निर्वस्त्र देखना चाहता है, और वह उसके साथ यौन संबन्ध रखने की कल्पना करता है। काश, वह किसी तरह से उसे मिल जाए!

लेकिन फरीसी की एक समस्या है। वह विवाहित है और उसके धर्म में व्यभिचार वर्जित है। वह सातवीं आज्ञा को तोड़ना नहीं चाहता है (बेशक हर बार उसके लिए लालसा रखने पर वह पहले से ही इसे तोड़ चुका है)। वह क्या कर सकता है?

इसका एक समाधान है। अपनी वर्तमान पत्नी को तलाक देने पर वह अपने मन में रहने वाली उस लड़की से विवाह कर सकता है। लेकिन तलाक देना क्या व्यवस्था के अनुसार सही है? उसका एक साथी फरीसी उससे कहता है कि *हाँ।* इसके लिए एक धर्मशास्त्र का पद है। व्यवस्थाविवरण 24:1 अपनी पत्नी को तलाक दिये जाने पर तलाक का त्यागपत्र देने के बारे में कहता है। कुछ परिस्थितियों में तलाक देना व्यवस्था के अनुसार सही हो सकता है। लेकिन वे परिस्थितियां क्या हैं? परमेश्वर के कहे हुए को वह निकटता से पढ़ता है :

> यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसके बाद उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उस से अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिये त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे.. (व्यवस्था. 24:1)।

अहा! वह अपनी पत्नी में कुछ निर्लज्जता पाने पर उसे तलाक दे सकता है। और उसके पास इसका कारण है। वह गली के उस ओर रहने वाली स्त्री के समान सुन्दर नहीं है। (यह एक अस्वाभाविक उदाहरण नहीं है। रब्बी हिलेल–जो यीशु के दिनों के तलाक के संबन्ध की शिक्षा में प्रचलित रहा है, उसके अनुसार एक व्यक्ति दूसरी स्त्री को अपनी पत्नी से अधिक आकर्षक होने के कारण तलाक दे सकता है क्योंकि इससे उसकी पत्नी का उसकी दृष्टि में कोई "औचित्य" नहीं रह जाता। रब्बी हिलेल ने यह भी सिखाया कि यदि किसी की पत्नी खाने में अधिक नमक डाल दे या किसी

दूसरे व्यक्ति से बात करे, या उसके लिए पुत्र उत्पन्न न करे तो भी उसे तलाक दिया जा सकता है)।

अत: हमारा लालसा करनेवाला फरीसी व्यवस्था के अनुसार अपनी पत्नी को आवश्यक त्यागपत्र देने के द्वारा उसे तलाक देकर और जल्द ही अपनी कल्पनाओं की स्त्री से विवाह कर लेता है। और यह सब बिना किसी दोष भावना के किया जाता है क्योंकि इसमें परमेश्वर की व्यवस्था का आज्ञा का पालन किया गया है!

एक भिन्न दृष्टिकोण
A Different View

निस्संदेह, परमेश्वर चीज़ों को भिन्न तरह से देखता है। उसने व्यवस्थाविवरण 24:1-4 में वर्णित ''निर्लज्जता'' को कभी भी प्रतिबन्धित नहीं किया था चाहे यह तलाक देने का वैध कारण था। वास्तव में, यह परिच्छेद इस बारे में कुछ नहीं कह रहा है कि तलाक देना कब न्यायपूर्ण है और कब न्यायपूर्ण नहीं है। इसमें केवल दो बार तलाक देने या एक बार तलाक देने एक विधवा पत्नी के दुबारा अपने पहले पति से विवाह करने के बारे में मना किया गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में इस तरह का व्यवहार ''निर्लज्जता'' होगी जो इस परिच्छेद के आधार पर तलाक को वैध मानता है।

परमेश्वर के विचार में किसी भी तरह से मेरे द्वारा बताया गया काल्पनिक व्यक्ति व्यभिचारी से भिन्न नहीं है। उसने सातवीं आज्ञा को तोड़ा है। वास्तव में वह एक सामान्य व्यभिचारी से भी अधिक दोषी है, क्योंकि वह ''दोहरे व्यभिचार'' का दोषी है। ऐसा कैसे है? सर्वप्रथम, उसने स्वयं व्यभिचार किया। यीशु ने बाद में कहा, ''जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है'' (मत्ती 19:9)।

दूसरा, क्योंकि उसकी पत्नी अब उसके द्वारा छोड़े जाने के कारण दूसरे पति को पाने की इच्छा करती है, परमेश्वर के विचार में फरीसी ने अपनी पत्नी को दूसरे व्यक्ति के साथ यौन संबन्ध स्थापित करने को बल देने का पाप किया है। अत:, वह उसे ''व्यभिचार''[40] कराने के पाप में डालता है। यीशु ने कहा, ''जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे, तो वह उस से व्यभिचार *करवाता* है'' (मत्ती 5:32, पर बल दिया गया है)।

यीशु हमारे इस लालसा करने वाले फरीसी को ''तिगुने व्यभिचारी'' का दोषी मानता है ''और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह कर, वह व्यभिचार करता है'' (मत्ती 5:32),

40. बेशक परमेश्वर उसे पुनर्विवाह करने पर व्यभिचार का दोषी नहीं ठहराता वह केवल अपने पति के पाप का शिकार बनी थी। निस्संदेह उसके पुनर्विवाह करने तक यीशु के शब्दों का कोई अर्थ नहीं रह जाता। अन्यथा उसके एक व्यभिचारी होने पर विचार करने का कोई अर्थ नहीं होता।

अर्थात् परमेश्वर फरीसी की पहली पत्नी के नये पति को ''व्यभिचारी'' होने का दोषी मानता है?[41]

यीशु के दिनों में यह एक उत्तेजक विषय था, जैसा हमने एक दूसरे स्थान में पढ़ा जहां फरीसियों ने उससे प्रश्न किया, ''क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है?'' (मत्ती 19:3)। उनका प्रश्न उनके मनों को प्रगट करता है। निस्संदेह, उनमें से कुछ किसी भी कारण से तलाक को उचित मानने पर विश्वास करना चाहते थे।

मुझे इसमें यह भी जोड़ना चाहिए कि मसीहियों के लिए यह कितनी लज्जा की बात है कि वे तलाक के इस संदर्भ को लेकर उसकी गलत व्याख्या करते और परमेश्वर की संतान पर भारी बेड़ियों को डालते हैं। यीशु उस मसीही के बारे में नहीं बोल रहा था जिसने उद्धार न पाने की दशा में तलाक दिया था, और जो मसीह से प्रेम करनेवाले साथी को पाकर उससे विवाह करता है। यह व्यभिचार के समान नहीं है। यदि यीशु का यह अभिप्राय था तो हमें सुसमाचार को बदलना होगा, क्योंकि यह सभी तरह को पापियों के पापों को क्षमा करने के बारे में अधिक समय तक नहीं कहता है। अब से हम यह प्रचार करेंगे ''यीशु तुम्हारे लिये मारा गया, और यदि पश्चात्ताप कर उस पर विश्वास करो तो तुम्हें तुम्हारे सारे पापों से क्षमा मिल सकती है। यदि आपने तलाक दे दिया है, तो आपको निश्चित होना होगा कि आप पुनर्विवाह नहीं करेंगे या फिर आप व्यभिचार में रहेंगे और बाइबल कहती है कि सभी व्यभिचारी नरक जाएंगे। यदि आपने तलाक देकर पुनर्विवाह कर लिया है, मसीह के निकट आने से पहले आपको एक और पाप करने और अपने वर्तमान साथी को तलाक देने की ज़रूरत है। अन्यथा आप व्यभिचार में रहेंगे, और व्यभिचारियों को उद्धार नहीं मिला है।''[42] पर क्या यही सुसमाचार है?[43]

शास्त्रियों और फरीसियों से विपरीत, ईमानदार बनें

Be Honest, Unlike the Scribes and Pharisees

अधर्मी चाल-चलन और शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा पवित्रशास्त्र का गलत अर्थ निकाले जाने का यीशु का तीसरा उदाहरण सत्य को बताने की परमेश्वर की आज्ञा से संबन्धित है। शास्त्रियों और फरीसियों ने झूठ बोलने के एक बहुत ही रचनात्मक

41. पुन:, परमेश्वर नए पति को भी व्यभिचार का दोषी नहीं ठहराता। वह केवल एक तलाकशुदा स्त्री से विवाह करते हुए एक अच्छा कार्य कर रहा था। तौभी, यदि एक पुरुष एक स्त्री से विवाह करने के कारण उसे अपने पति को तलाक देने को उत्तेजित करे, तब वह व्यभिचार का दोषी होगा, और शायद यीशु ने इसी पाप को यहां इंगित किया है।

42. इसके अलावा अन्य परिस्थितियों को भी बताया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक मसीही स्त्री जिसका उद्धार न पाया पति यदि उसे तलाक देता है और वह एक मसीही पुरुष से पुनर्विवाह करती है तो वह निश्चय ही व्यभिचार की दोषी नहीं मानी जाएगी।

43. बाद के अध्याय में, मैंने इस विषय पर पूरी तरह से बताया है तलाक और पुनर्विवाह के अध्याय में।

तरीके को विकसित कर लिया था। हम मत्ती 23:16-22 से सीखते हैं कि उन्होंने स्वयं को मन्दिर, देवी या स्वर्ग की शपथ खाने पर बंधा हुआ नहीं पाया था। तौभी, यदि वे मन्दिर के *सोने,* वेदी की *भेंट,* या स्वर्ग के *परमेश्वर* की शपथ खाते थे, तो वे अपनी शपथ से बंध जाते *थे।* यह एक व्यस्क के बालक के समान यह विचार करने के समान था कि वह तब तक सत्य को बताने से मुक्त है जब तक कि उसकी उंगलियां उसकी कमर के पीछे तक न मिल जाएं। यीशु अपने शिष्यों से सत्य को बताने की अपेक्षा करता है।

> फिर तुम यह सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि ''झूठी शपथ न खाना'', परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। न धरती की, क्योंकि वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बात ''हाँ की हाँ'' या ''नहीं की नहीं'' हो; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होता है वह बुराई से होता है (मत्ती 5:33-37)।

शपथ खाने के संबन्ध में परमेश्वर की इस एक आज्ञा के अतिरिक्त और कहीं कुछ नहीं कहा गया है। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग सदैव सत्य बोलें, जिससे कभी भी शपथ खाने की ज़रूरत नहीं होगी।

वचन देना गलत नहीं है, क्योंकि एक वचन शपथ पर प्रतिज्ञा से अधिक और कुछ नहीं होता है। वास्तव में, परमेश्वर का आज्ञापालन करने का वचन लेना बहुत अच्छा है। उद्धार का आरम्भ यीशु के पीछे चलने का वचन लेने से होता है। लेकिन जब लोग अपनी बात पर विश्वास दिलाने के लिए शपथ खाते हैं, *यह इस बात को प्रगट करता है कि वे सामान्यता झूठ बोलते हैं।* सच बोलने वाले लोगों को कभी भी शपथ खाने की ज़रूरत नहीं होती है। तौभी, आज बहुत सी कलीसियाएं झूठों से भरी हुई हैं, और प्रभु के सेवक प्राय: अगुवों के रूप में धोखा देनेवाले होते हैं।

शिष्य-निर्माता सेवक सत्यवादिता के उदाहरण को स्थापित करते हुए अपने शिष्यों को सदैव सत्य बोलने के बारे में सिखाता है। वह यूहन्ना की चेतावनी को जानता है कि सभी झूठे उस झील में डाले जाएंगे जो आग और गन्धक से जलती रहती है (देखें प्रका. 21:8)।

शास्त्रियों और फरीसियों के समान, बदला न लें

Don't Take Revenge, as do the Scribes and Pharisees

शिकायतों की सूची में यीशु का अगला विषय पुराने नियम के एक जाने माने

पद का फरीसी विकार है। बाइबल व्याख्या के अध्याय में हम इस परिच्छेद को पहले ही देख चुके हैं।

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि ''आँख के बदले आँख, और दांत के बदले दांत'' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। और यदि कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़ (मत्ती 5:38-42)।

मूसा की व्यवस्था के अनुसार यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को हानि पहुंचाने का दोषी पाया जाए तो उसका दण्ड उसी हानि के समान होना चाहिए। यदि उसने किसी के दांत को तोड़ दिया हो तो उसका दांत भी तोड़ दिया जाना चाहिए। इस आज्ञा को यह आश्वासन देने के लिए दिया गया था कि अदालती मामलों में बड़े अपराधों पर न्याय दिया जाएगा। परमेश्वर ने व्यवस्था के अंतर्गत अपराध को निर्धारित करने, न्याय को आश्वस्त करने और प्रतिशोध को नियंत्रित करने के लिए अदालतों और न्यायधीशों की एक प्रणाली को संस्थापित किया था। और परमेश्वर ने न्यायधीशों को बिना किसी पक्षपात के न्याय करने की आज्ञा दी थी। उन्हें ''आंख के लिए आंख और दांत के लिए दांत को नापना था।'' लेकिन यह वाक्यांश और आज्ञा सदैव अदालतों में न्याय से संबन्धित परिच्छेद के रूप में पाई जाती है।

एक बार फिर से शास्त्रियों और फरीसियों ने इस आज्ञा को एक ऐसी आज्ञा के रूप में मोड़ दिया था जिसमें एक पवित्र प्रतिबन्ध को व्यक्तिगत बदले का रूप दे दिया गया था। इसके साथ साथ, उन्होंने एक छोटे से अपराध के लिए बदला लेने को भी ''शून्य सहनशीलता'' की नीति को अपना लिया था।

परमेश्वर अपने लोगों से सदैव अधिक की अपेक्षा करता है। उसने बदला लेने के लिए मना किया है (देखें व्यवस्था. 32:35)। पुराने नियम ने सिखाया कि लोगों को अपने शत्रुओं के प्रति दया दिखानी चाहिए (देखें निर्ग. 23:4-5; नीति. 25:21-22)। यीशु ने इस सत्य को अपने शिष्यों को यह बताने के द्वारा व्यक्त किया कि बुरे लोगों से निपटते समय अपना गाल उनकी ओर फेर दें या उनके साथ एक मील अतिरिक्त जाएं। जब हमारे साथ कुछ गलत किया जाता है तो परमेश्वर चाहता है कि हम करुणामयी बनें, बुराई के बदले भलाई दिखाते हुए।

लेकिन क्या यीशु हम से यह अपेक्षा करता है कि लोग हमारा लाभ उठाएं, कि उन्हें उनकी इच्छानुसार हमारा नाश करने दें? क्या एक गैर-विश्वासी द्वारा हमारे विरुद्ध अवैधानिक कार्य किये जाने पर उसे अदालत ले जाना गलत है? यीशु अदालत में

बड़े अपराधों को ले जाने के बारे में नहीं बल्कि व्यक्तिगत प्रतिशोध के बारे में बोल रहा है। इस पर ध्यान दें कि यीशु ने यह नहीं कहा कि हम उस व्यक्ति को अपनी गर्दन काटने के लिए दे दें जिसने कुछ समय पूर्व ही हमारी पीठ में छुरा घोंपा था। उसने यह नहीं कहा कि यदि कोई हम से कार मांगे तो हमें उसे अपना घर दे देना चाहिए। यीशु हमें केवल इतना बता रहा है कि दैनिक रूप में स्वार्थी लोगों के साथ सामान्य चुनौतियों का सामना करते हुए हमें सहनशीलता और करुणा को दिखाना है। वह चाहता है कि हम स्वार्थी लोगों की अपेक्षा के विपरीत दयालु बनें। शास्त्री और फरीसी इस मानदण्ड तक नहीं पहुंच पाए थे।

अधिकांश दिखावा करनेवाले मसीही इतनी आसानी से अपराध में क्यों गिर जाते हैं? वे उस छोटे से अपराध से इतनी जल्दी नाराज़ क्यों हो जाते हैं जो गाल पर थप्पड़ मारे जाने से दस गुणा छोटा होता है? क्या इन लोगों ने उद्धार पाया है? शिष्य-निर्माण करने वाला सेवक गाल को फेरने का उदाहरण रखता है, और वह अपने शिष्यों को भी ऐसा ही करने की शिक्षा देता है।

शास्त्रियों और फरीसियों के समान, अपने शत्रुओं से घृणा न करो

Don't Hate Your Enemies, as do the Scribes and Pharisees

अन्त में यीशु ने परमेश्वर द्वारा दी गई उस आज्ञा को सूचीगत किया जिसे शास्त्रियों और फरीसियों ने अपने घृणित हृदयों के कारण विकृत कर दिया था।

> तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।'' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो। जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:33-48)।

पुराने नियम में परमेश्वर ने कहा, ''अपने पड़ोसी से अपने समान ही प्रेम रखना'' (लैव्य. 19:18), लेकिन शास्त्रियों और फरीसियों ने सुविधानुसार उन्हें ही पड़ोसी माना जो उनसे प्रेम करते थे। इसके अलावा हर कोई उनका शत्रु था, और क्योंकि परमेश्वर ने केवल अपने पड़ोसी से ही प्रेम करने को कहा है, तो अपने शत्रुओं से

घृणा करना उचित होगा। तथापि, यीशु के अनुसार, परमेश्वर का उद्देश्य यह नहीं था।

यीशु आगे भले सामरी की कहानी में बताता है कि हमें *प्रत्येक* व्यक्ति को अपने पड़ोसी के रूप में देखना चाहिए।[44] परमेश्वर चाहता है कि हम *प्रत्येक* से प्रेम करें, जिसमें हमारे शत्रु भी शामिल हैं। अपने बच्चों के लिए परमेश्वर का यही मानदण्ड है, एक ऐसा मानदण्ड जिसके अनुसार वह स्वयं रहता है। वह केवल भले लोगों के लिए ही फसल उत्पन्न करनेवाले सूर्य और वर्षा को नहीं भेजता है, बल्कि बुरे लोगों के लिए भी। जो लोग दया दिखाने के योग्य न हों उनके प्रति दया दिखाते हुए हमें उसका अनुसरण करना चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं तो यह दिखाता है कि हम ''अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान हैं'' (मत्ती 5:45)। वास्तविक रूप से नया जन्म पाए लोग अपने पिता के समान कार्य करते हैं।

परमेश्वर हमसे हमारे शत्रुओं के प्रति भावनात्मक या उनकी बुराई को स्वीकार करने का दिखावा करनेवाले प्रेम को करने की अपेक्षा नहीं करता। परमेश्वर हमसे हमारे विरोधियों के प्रति जोशीली भावनाओं को विकसित करने की मांग नहीं करता। वह हमसे यह झूठ बोलने को नहीं कहता है, कि हमारे शत्रु सच में अद्‌भुत लोग हैं। लेकिन वह हमसे उनके प्रति करुणामयी रहने और उन्हें स्वीकार करने व उनके लिए प्रार्थना करने की अपेक्षा करता है।

ध्यान दें कि यीशु ने एक बार फिर से अपने प्राथमिक विषय पर बल दिया है—*केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।* उसने अपने शिष्यों को बताया कि यदि वे अपनों से प्रेम करनेवालों से ही प्रेम करते हैं तो वे अन्यजातियों और चुंगी लेनेवालों के समान ही हैं, ये वे दो तरह के लोग हैं जिनके नरक जाने के लिए प्रत्येक यहूदी सहमत होगा। अतः, यह इस बात को कहने का दूसरा तरीका है कि अपने से प्रेम करनेवालों को नरक की ओर ले जा रहे हैं।

शास्त्रियों और फरीसियों के विपरीत, सही मनसा से भलाई करें

Do Good for the Right Motives, Unlike the Scribes and Pharisees

यीशु अपने अनुयायियों से केवल पवित्र होने की अपेक्षा ही नहीं करता है, बल्कि वह उनसे सही कारणों के लिए पवित्र होने की अपेक्षा करता है। परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए एक व्यक्ति गलत उद्देश्य रखते हुए परमेश्वर को अप्रसन्न कर

44. वह व्यवस्था का एक यहूदी शिक्षक था, जिसने स्वयं को धर्मी ठहराते हुए यीशु से पूछा, ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' आप जान सकते हैं कि उसे सही जवाब का पता होगा। यीशु ने उसे एक सामरी की कहानी से जवाब दिया, एक ऐसी जाति का सदस्य जिनसे यहूदी घृणा करते थे, जिसने स्वयं को एक गलत व्यवहार करने वाले यहूदी का पड़ोसी प्रमाणित किया (देखें लूका 10:25-37)।

सकता है। यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों की निन्दा की, क्योंकि वे दूसरों को आकर्षित करने के लिए भले कार्य करते थे (देखें मत्ती 23:5)। वह अपने शिष्यों से भिन्न होने की अपेक्षा करता है।

> सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे। इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके। परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ करता है, उसे तेरा बाया हाथ न जानने पाए। ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा (मत्ती 6:1-4)।

यीशु ने अपने अनुयायियों से दरिद्रों को दान देने की अपेक्षा की। व्यवस्था ने ऐसा करने की आज्ञा दी थी (देखें निर्ग. 23:11; लैव्य. 19:10; 23:22; 25:35; व्यवस्था. 15:7-11), लेकिन शास्त्री और फरीसी तुरही बजाते हुए ऐसा करते थे, प्रकट रूप से दरिद्र लोगों को सार्वजनिक वितरण में बुलाकर। तौभी, कितने दिखावा करनेवाले मसीही दरिद्रों को *कुछ नहीं* दे रहे हैं? उन्होंने दरिद्रों को दान देना अपनी ज़रूरत में शामिल नहीं किया है। यदि फरीसी और शास्त्री स्वार्थ के कारण अपने दान देने का विज्ञापन करते थे, तो दिखावा करनेवाले मसीहियों को दरिद्रों की दुर्दशा की *उपेक्षा* करने के लिए क्या चीज़ प्रेरित करती है? इस तरह से, क्या उनकी धार्मिकता फरीसियों और शास्त्रियों से बढ़कर है?

जैसा पौलुस ने कुरिन्थियों 3:10-15 में कहा, हम भी गलत कारणों से भली चीज़ों को कर सकते हैं। यदि हमारी मनसा शुद्ध नहीं है, तो हमारे भले कार्यों का कोई प्रतिफल नहीं मिलेगा। पौलुस ने लिखा कि अशुद्ध उद्देश्यों से सुसमाचार का प्रचार करना संभव है (देखें फिलि. 1:15-17)। जैसा यीशु ने कहा इस बात से आश्वस्त होने का एक अच्छा तरीका है कि हमारी मनसा भली है हमें गुप्त रूप से देना चाहिए, हमारा बांया हाथ जो दे रहा है उस बारे में हमारे दायें हाथ को पता न चलने पाए। शिष्य-निर्माता सेवक अपने शिष्यों को दरिद्रों को देने की शिक्षा देता है (उन्हें आवश्यक चीज़ें देते हुए) और शांतिपूर्वक अपने द्वारा दिये जाने वाले प्रचार पर कार्य भी करता है।

सही कारणों के लिए प्रार्थना और उपवास

Prayer and Fasting for the Right Reasons

यीशु ने अपने अनुयायियों से प्रार्थना करने और उपवास रखने की भी अपेक्षा की थी, और यह भी कि वे उन चीज़ों को दूसरों को दिखाने के लिए न करें, बल्कि अपने पिता को प्रसन्न करने को। अन्यथा वे नरक जानेवाले शास्त्रियों और फरीसियों

से भिन्न नहीं होंगे, जो लोगों की सराहना पाने के लिए प्रार्थना करते व उपवास रखते थे; जो एक अस्थाई प्रतिफल था। यीशु ने अपने अनुयायियों को शिक्षा दी:

> और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है (यीशु के श्रोता जानते थे कि वह किसके बारे में बोल रहा था); मैं तुमसे सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द करके अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
>
> जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें (एक बार फिर, यीशु के श्रोता निश्चय ही यह जानते थे कि वह किनके बारे में बोल रहा था); मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा (मत्ती 6:5-6, 16-18)।

कितने दिखावा करनेवाले मसीहियों का प्रार्थना का जीवन बिना उपवास के होता है?[45] इस तरह से, उनकी धार्मिकता की तुलना उन शास्त्रियों और फरीसियों से कैसे की जाती है जिन्होंने इनका पालन किया (गलत कारणों से)।

प्रार्थना और क्षमा के संबन्ध में एक विषयान्तर

A Digression Regarding Prayer and Forgiveness

जबकि प्रार्थना के विषय पर यीशु ने अपने शिष्यों को इस संबन्ध में निर्देश देने के लिए विषयान्तर लिया कि उन्हें कैसे प्रार्थना करनी चाहिए। यीशु चाहता है कि हम इस तरह से प्रार्थना करें कि स्वर्गीय पिता ने अपने बारे में जो कुछ हम पर प्रगट किया है, हम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा इन्कार करते हुए उसका अनादर न करें। चूंकि परमेश्वर हमारे मांगने से पहले ही हमारी ज़रूरतों को जानता है (वह प्रत्येक चीज़ जानता है), अत: प्रार्थना करते हुए हमें अनावश्यक शब्दों को दोहराने की ज़रूरत नहीं है :

> प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बकबक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। सो तुम उनकी नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने

45. इस पुस्तक में बाद में मैंने उपवास के विषय पर एक पूरे अध्याय को जोड़ा है।

> से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यकता है (मत्ती 6:7-8)।

सच में, हमारी प्रार्थनाएं प्रगट करती हैं कि हम परमेश्वर को कितनी अच्छी तरह से जानते हैं। जैसा कि उसने अपने वचन में प्रगट किया उसके अनुसार जो उसको जानता है वह प्रार्थना के अन्त में इस तरह से प्रार्थना करता है कि *उसकी* इच्छा पूरी हो और *उसे* महिमा मिले। उनकी सबसे बड़ी इच्छा पवित्र बनने और उसे पूरी तरह से प्रसन्न करने की होती है। यही चीज़ यीशु की प्रार्थना में दिखती है, जिसे हम प्रभु की प्रार्थना कहते हैं, यीशु द्वारा अपने शिष्यों को दिये गए निर्देशों में इसे बाद में शामिल किया गया है। हमारी प्राथमिकताओं और समर्पण के लिए यह उसकी अपेक्षाओं को प्रगट करता है।[46]

> सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो : ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे'' (मत्ती 6:9-11)।

मसीह के शिष्यों के लिए सबसे प्रमुख चीज़ यह होनी चाहिए कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए, कि उसका पवित्र के रूप में आदर किया जाए।

निस्संदेह, जो यह प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए, उन्हें परमेश्वर के नाम को पाक मानते हुए स्वयं को पवित्र रखना चाहिए। अन्यथा ऐसा करना ढोंगपूर्ण माना जाएगा। अत:, प्रार्थना हमारी इस इच्छा को प्रगट करती है कि हमें स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना है।

आदर्श प्रार्थना का दूसरा निवेदन भी इसी तरह का है : ''तेरा राज्य आए।'' राज्य के विचार का अर्थ है कि एक राज्य पर शासन करनेवाला राजा है। मसीही शिष्य अपने उस राजा को देखना चाहता है, जो उसके जीवन और पूरी पृथ्वी पर शासन करता है। हर कोई आज्ञाकारी विश्वास में होकर राजा यीशु के सामने घुटने झुकाएगा।

तीसरा निवेदन पहले और दूसरे की ध्वनि है : ''तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।'' हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित हुए बिना इस तरह की प्रार्थना को ईमानदारी के साथ कैसे कर सकते हैं? सच्चा शिष्य इच्छा करता है कि परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर उसी तरह से पूर्णता के साथ पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है।

कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए, कि उसकी इच्छा पूरी हो, यह हमारी

46. कुछ दुर्भाग्यवश यह दावा करते हैं कि यह एक प्रार्थना नहीं है जिसे मसीहियों को करना चाहिए, क्योंकि इसे ''यीशु के नाम में'' नहीं किया गया है। तथापि, इस तर्क को लागू करते हुए, हम यह परिणाम नहीं निकाल सकते कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और पत्रियों में वर्णित अधिकांश प्रार्थनाएं ''मसीही प्रार्थनाए'' नहीं थी।

''दिन भर की रोटी'' की आवश्यकता को पूरा किये जाने से अधिक महत्वपूर्ण होना चाहिए। यह चौथा निवेदन एक कारण से चौथे स्थान पर रखा गया है। यद्यपि यह स्वयं हमारी प्राथमिकताओं के एक सही क्रम को रखते हुए लालच के किसी संकेत को नहीं देता है। मसीह के शिष्य परमेश्वर की सेवा करते हैं न कि धन सम्पत्ति की। वे पार्थिव खज़ाने पर केन्द्रित नहीं होते हैं।

मैं इसमें यह भी जोड़ना चाहता हूं कि यह चौथा निवेदन यह संकेत देता प्रतीत होता है कि इस आदर्श प्रार्थना को प्रतिदिन प्रत्येक दिन के आरम्भ पर करना चाहिए।

आदर्श प्रार्थना का जारी रहना
The Model Prayer Continues

क्या मसीह के शिष्य कभी पाप करते हैं? ऐसा होने पर, यीशु ने उन्हें अपने पापों की क्षमा मांगने करने की शिक्षा दी।

> ''और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।'' इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा (मत्ती 6:12-15)।

यीशु के शिष्यों ने जाना कि उनकी अनाज्ञाकारिता परमेश्वर का विरोध करती है, और पाप करने पर वे शर्मिन्दा होते थे। वे दाग को हटाना चाहते थे, और उनका अनुग्रहकारी स्वर्गीय पिता उन्हें क्षमा करने के लिए तैयार भी रहता है। लेकिन उन्हें प्रभु की प्रार्थना में पाये जाने वाले पांचवें निवेदन के अनुसार, क्षमा मांगनी चाहिए।

तथापि, उनके क्षमा प्राप्त करने पर, उन्हें भी दूसरों को क्षमा करना है। चूंकि उनका बहुत अधिक क्षमा किया गया है, अत: वे भी हर उस व्यक्ति को क्षमा करने को प्रतिबन्धित हैं जो उनसे क्षमा प्राप्त करना चाहता है। (और उन्हें उन लोगों से मेल और प्रेम करना है जो उनके साथ ऐसा नहीं करते।) यदि वे क्षमा करने से इंकार कर देंगे तो परमेश्वर भी उन्हें क्षमा नहीं करेगा।

छठा और अन्तिम निवेदन भी सच्चे शिष्य की पवित्र बनने की इच्छा को प्रगट करता है: ''हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई (बुरे व्यक्ति) से बचा।'' एक सच्चा शिष्य इतना अधिक बनने की चाह रखता है कि वह परमेश्वर से ऐसी स्थिति में न ले जाने के लिए कहता है जहां उसकी परीक्षा हो, ताकि वह परास्त न हो। इसके अलावा, वह परमेश्वर से किसी भी ऐसी बुराई से बचाने के लिए निवेदन करता है जो उसे फंसा सकती है। निस्संदेह एक बुरे और परखे जानेवाले संसार में हमारे यात्रा

करने से पूर्व, प्रत्येक दिन के आरम्भ में की जानेवाली यह एक अच्छी प्रार्थना है। और निश्चय ही परमेश्वर से हम इस प्रार्थना के जवाब को पाने की अपेक्षा कर सकते हैं, जिसे उसने हमें करना सिखाया है।

परमेश्वर को जाननेवाले जानते हैं कि इस प्रार्थना के सभी छह निवेदन इतने उपयुक्त क्यों हैं। प्रार्थना की अन्तिम पंक्ति में कारण को प्रगट किया गया है: ''क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं'' (मत्ती 6:13)। परमेश्वर एक महान राजा है जो अपने उस राज्य पर शासन करता है जिसमें हम उसके सेवक हैं। वह सर्व-सामर्थी है, और किसी को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध जाने का साहस नहीं करना चाहिए। सारी महिमा सदा तक उसी की रहेगी। वह आज्ञा पालन किये जाने के योग्य है।

प्रभु की प्रार्थना का प्रमुख विषय क्या है? *पवित्रता।* मसीह के शिष्य चाहते हैं कि परमेश्वर का नाम पवित्र माना जाए, कि उसका राज्य पृथ्वी पर स्थापित हो, और यह कि उसकी इच्छा हर कहीं संपूर्ण रूप से पूरी हो। यह उनके लिए उनकी रोज़ की रोटी से भी अधिक महत्वपूर्ण है। वे उसकी दृष्टि में भानेवाले बनना चाहते हैं, और असफल हो जाने पर वे परमेश्वर से क्षमा पाना चाहते हैं। क्षमा किये जाने पर, वे दूसरों तक इस क्षमा को बढ़ाते हैं। वे पूरी तरह से पवित्र होना चाहते हैं, उस मात्रा तक कि वे परीक्षा से बच सकें, क्योंकि परीक्षा उनके पापों के अवसर में वृद्धि करती है। शिष्य-निर्माता अपने शिष्यों को ये सब चीज़ें सिखाता है।

शिष्य और उसकी भौतिक सम्पत्ति

The Disciple and His Material Possessions

पहाड़ी उपदेश का अगला विषय दिखावटी मसीही के लिए बहुत ही विचलित कर देनेवाला है, जिसके जीवन में प्राथमिक उद्देश्य भौतिक चीज़ों में वृद्धि करने का होता है :

> अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। शरीर का दीया आंख है; इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा। कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ

जानेगा; ''तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते'' (मत्ती 6:19-24)।

यीशु ने आज्ञा दी कि हम अपने लिए पृथ्वी पर धन जमा न करें। धन या ''खज़ाना'' क्या है? खज़ाने का अभिप्राय: एक ऐसी चीज़ से है जिसे दूसरों से छिपाकर रखा जाता है और व्यावहारिक रूप में जिसका प्रयोग कभी नहीं किया जाता है। यीशु ने इन चीज़ों को काई, कीड़ा और चोर को आकर्षित करनेवाला कहा। इसे कहने का एक दूसरा तरीका होगा ''अनावश्यक चीज़ें।'' कीड़ा हमारी अलमारी में से उन चीज़ों को खाता है जिन्हें हम काफी समय के बाद पहनते हैं। काई भी वहीं ज़मा होती है जिसका प्रयोग हम बहुत कम ही करते हैं। विकासशील देशों में चोर अधिकांशत: उन चीज़ों को चुराते हैं जिनकी आवश्यकता लोगों को वास्तव में नहीं होती। कलात्मक चीज़ें, गहने, कीमती यंत्र, और जिन्हें गिरवीं रखा जा सकता है।

सच्चा शिष्य ''अपना सब कुछ त्याग देता है'' (देखें लूका 14:33)। वे केवल परमेश्वर के धन के भण्डारी होते हैं, अत: उनके लिए धन खर्च करने के संबन्ध में लिये जाने वाला प्रत्येक निर्णय आत्मिक निर्णय होता है। हम अपने धन के साथ जो करते हैं वह इस बात को दिखाता है कि हम पर किसका नियंत्रण है। जब हम अपने धन से अनावश्यक चीज़ों को खरीदते हैं तो यह प्रगट करता है कि हम पर यीशु का नियंत्रण नहीं है क्योंकि यदि ऐसा होता तो उसने जो धन हमें सौंपा था उससे हम अच्छी चीज़ें करते।

वे अच्छी चीज़ें क्या हैं? यीशु ने हमें स्वर्ग में धन जमा करने की आज्ञा दी है। यह कैसे संभव है? लूका के सुसमाचार में वह हमें बताता है, ''अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो, और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता'' (लूका 12:33)।

दरिद्र की सहायता करने और सुसमाचार को फैलाने के लिये धन देने के द्वारा हम स्वर्ग में अपने लिए धन जमा करते हैं। यीशु हमसे बेकार की चीज़ों में धन लगाने के बजाय वहां निवेश करने को कहता है जहां उसका महत्व कभी भी कम नहीं होगा। ठीक ऐसा ही शिष्य-निर्माता सेवक कर रहा है, और वह अपने शिष्यों को भी वैसा ही करने की शिक्षा दे रहा है।

बुरी आँख

The Bad Eye

यीशु का उन लोगों के बारे में बताने का क्या अभिप्राय था जिनकी आंखें साफ होने के कारण उनका पूरा शरीर उजाले से भरा है और बुरी आंख वालों का शरीर अन्धियारे से भरा है? उसके शब्द अवश्य ही धन और भौतिक चीज़ों के संबन्ध में

होने चाहिए, क्योंकि इसी के बारे में वह पहले और बाद में भी बोल रहा था।

6:23 में यूनानी का अनुवादित शब्द ''बुरा'' मत्ती 20:15 में अनुवादित ''बुरे'' के समान ही है। वहां एक स्वामी अपने कर्मचारी से कहता है, ''क्या तू मेरे भले होने के कारण *बुरी* दृष्टि से देखता है?'' निस्संदेह एक आंख कभी भी बुरी नहीं हो सकती। अत: एक ''बुरी आंख'' वाले व्यक्ति की अभिव्यक्ति उसकी लालची इच्छाओं को बताती है। यीशु ने मत्ती 6:22-23 में जो कुछ कहा उसे समझने में यह हमारी सहायता करता है।

एक साफ आंख वाला व्यक्ति उस व्यक्ति का प्रतीक है जिसका हृदय शुद्ध है, जो सत्य के प्रकाश को अपने भीतर आने देता है। अत: वह परमेश्वर की सेवा करते हुए धन को पृथ्वी पर नहीं बल्कि स्वर्ग में जमा करता है, जहां उसका मन है। बुरी आंख वाला व्यक्ति अपने भीतर सत्य के प्रकाश के मार्ग को बन्द कर देता है, क्योंकि वह सोचता है कि उसके पास पहले से ही सत्य है, और इस तरह से वह झूठ पर विश्वास करते हुए अंधकार से भरा है। वह अपना धन पृथ्वी पर जमा करता है, जहां उसका मन है। वह मानता है कि उसके जीवन का उद्देश्य आत्म-संतुष्टि है। धन उसका देवता है। वह स्वर्ग जानेवाला नहीं है।

धन का आपका देवता होने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि धन का आपके जीवन में वह स्थान है जो सही रूप में परमेश्वर का होना चाहिए। धन आपके जीवन को नियंत्रित कर रहा है। यह आपकी शक्ति, विचारों और समय को ले लेता है। यह आपके आनन्द का प्रमुख स्रोत है। आप इससे प्रेम करते हैं।[47] इसी कारण पौलुस ने लालच को मूर्तिपूजा के समान बताते हुए कहा कि कोई भी लालची व्यक्ति परमेश्वर के राज्य का अधिकारी नहीं होगा (देखें इफि. 5:5; कुलु. 3:5-6)।

परमेश्वर और धन दोनों ही हमारे जीवनों के स्वामी होना चाहते हैं, और यीशु ने कहा कि हम दोनों की सेवा नहीं कर सकते। पुन:, हम देखते हैं कि यीशु अपने प्राथमिक विषय पर टिका रहा-*केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।* उसने इसे स्पष्ट किया कि अंधकार से भरे हुए लोग वे हैं जिनका ईश्वर धन है, जिनका मन पृथ्वी पर है और जो पृथ्वी पर धन जमा करते हैं और जो जीवन की ओर जाने वाले सकरे मार्ग पर नहीं हैं।

लोभी दरिद्र
The Covetous Poor

भौतिक चीज़ों के प्रति ध्यानमगन रहना उस समय गलत होता है जब वे आरामदायक

47. एक अन्य अवसर पर, यीशु ने परमेश्वर और धन की सेवा करने की असंभावना के बारे में कहा था, और लूका हमें बताता है,'' फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे'' (लूका 16:14)। अत: पुन:, पहाड़ी उपदेश पर यीशु स्पष्ट रूप में फरीसियों की रीति और शिक्षा को प्रगट कर रहा था।

चीज़ें हों। एक व्यक्ति इन चीज़ों को गलत तरीके से पाने का प्रयास भी कर सकता है जबकि वे इतनी आवश्यक न हों। यीशु ने आगे कहा:

> इसलिये मैं तुम से कहता हूं (जो मैंने कहा, यह उस पर आधारित है), कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं? आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन को खिलाता है; क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी अपने सारे विभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था। इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्योंकर न पहनाएगा? इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि ''हम क्या खाएंगे'' या ''क्या पीएंगे'' या ''क्या पहनेंगे?'' क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। सो कल के लिये चिन्ता न करो क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है (मत्ती 6:25-34)।

इस पुस्तक के अधिकांश पाठक यीशु द्वारा संबोन्धित की जानेवाली चीज़ों को सभी लोगों से संबन्धित करने के योग्य नहीं होंगे। पिछली बार आप कब भोजन, पानी या वस्त्र के लिए चिन्तित हुए थे?

तथापि, यीशु के शब्द निश्चय ही हम सभी पर लागू होते हैं। यदि जीवन की *अनिवार्यताओं* की चिन्ता करना गलत है तो *अनावश्यक* चीज़ों में डूबे रहना कितना गलत होगा? यीशु ने अपने शिष्यों से दो प्रमुख चीज़ों की खोज करने की अपेक्षा की उसका राज्य और उसका धर्म। जब एक दिखावटी मसीही दशवांश-एक पुरानी वाचा का नियम, जिसे मैं जोड़ना चाहूंगा, नहीं दे सकता, लेकिन बहुत सी अनावश्यक चीज़ों को खरीद *सकता* है, तो क्या ऐसा करके वह परमेश्वर के उसके राज्य और धर्म की खोज करने के मानदण्ड पर रह रहा है? जवाब संभावित है।

दोष ढूंढने वाले न बनें

Don't be a Fault-Finder

यीशु की अपने शिष्यों के लिए न्याय करने और दोष ढूंढने के पाप के संबन्ध में अगली आज्ञाएं हैं :

> दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तेरी ही आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति देखकर निकाल सकेगा (मत्ती 7:1-5)।

इस परिच्छेद में यद्यपि यीशु ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शास्त्रियों और फरीसियों की ओर संकेत नहीं किया है, वे निश्चय ही इस पाप के दोषी थे, वे यीशु में दोष ढूंढते थे!

दूसरों का न्याय करने के विरुद्ध चेतावनी देने से यीशु का क्या अभिप्राय था?

सर्वप्रथम, आइये उस पर ध्यान दें जो उसका अभिप्राय नहीं था। उसका अभिप्राय यह नहीं था कि लोगों के कार्यों को देखने के द्वारा हमें उनके चरित्र का निर्धारण करना चाहिए। यह बिलकुल स्पष्ट है। इस भाग के पश्चात्, यीशु ने अपने शिष्यों को अपने मोती सूअरों के आगे और जो पवित्र है उसे कुत्तों को न देने के लिए कहा (देखें 7:6)। निस्संदेह, वह प्रतीकात्मक रूप से उन लोगों के बारे में बोल रहा था, उन्हें सूअर और कुत्ते कहते हुए, पवित्र चीज़ों ''मोतियों'' का महत्व न समझनेवाले लोग। वे निश्चय ही उद्धार न पाए गए लोग हैं और हमें इस बात का *न्याय* करना चाहिए कि यदि लोग सूअर और कुत्ते हैं तो हमें इस आज्ञा का पालन करना है।

इसके अतिरिक्त, यीशु ने अपने अनुयायियों को झूठे शिष्यों का *न्याय* करना सिखाया, ''भेड़ की खाल में भेड़िये'' (देखें 7:15) उनके फलों से पहचानते हुए। यीशु के निर्देशों का पालन करने में यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें लोगों की जीवन प्रणाली को देखते हुए न्याय करना चाहिए।

ऐसा ही, पौलुस ने कुरिन्थ के विश्वासियों से कहा था :

> मेरा कहना यह है; कि यदि कोई भाई कहलाकर व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर

करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना (1 कुरि. 5:11)।

इस निर्देश का पालन करने के लिए ज़रूरी है कि हम लोगों की जीवन प्रणाली की जांच करने के आधार पर उनके बारे में निर्णय लें।

प्रेरित यूहन्ना ने हमें बताया कि हम आसानी से पहचान सकते हैं कि कौन परमेश्वर की ओर से है और कौन शैतान की ओर से है। लोगों की जीवन-प्रणाली को देखने के द्वारा, यह जानना संभव हो जाता है कि किसने उद्धार पाया है और किसने नहीं (देखें 1 यूह. 3:10)।

इस तरह से, लोगों के कार्यों की जांच करने और न्याय करने के द्वारा कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या शैतान की ओर से हैं, उनके विरुद्ध न्याय करना कोई पाप नहीं है, जिसकी चेतावनी मसीह ने हमें दी गई है अत: यीशु का इससे क्या अभिप्राय था?

ध्यान दें कि यीशु एक भाई के छोटे दोषों *और दाग* को ढूंढने के बारे में बोल रहा था (ध्यान दें कि यीशु ने इस परिच्छेद में *भाई* शब्द का प्रयोग तीन बार किया है)। यीशु अविश्वासी लोगों का न्याय करने के विरुद्ध चेतावनी नहीं दे रहा था जिसके बारे में वह इस संदेश में थोड़ी देर बाद बताएगा। इसके विपरीत, इस बारे में कि मसीहियों को मसीहियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे में छोटे से छोटे दोष को भी नहीं ढूंढना चाहिए, और ऐसा विशेषकर उस समय में जब वे अपनी सबसे बड़ी गलती (दोष) की उपेक्षा कर रहे हों। इस तरह से तो वे ढोंगी बन जाते हैं। यीशु ने ढोंगी न्यायियों की एक भीड़ से एक बार इस तरह से कहा था, ''तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे'' (यूहन्ना 8:7)।

प्रेरित याकूब, जिसका संदेश पहाड़ी संदेश के समानान्तर ही है, उसने भी इसी तरह से लिखा, ''हे भाइयो, एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो, देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है'' (याकू. 5:9)। संभवत: यह हमारी उस किसी चीज़ को समझने में सहायता करता है– अपने सह-विश्वासियों के दोष ढूंढना और उसके बाद एक दूसरे से उसकी शिकायत करते हुए उसका प्रसार करना। यह कलीसिया के प्रचलित पापों में से एक है, और दोषी लोग स्वयं को न्याय किये जाने के खतरनाक स्थान पर रखते हैं। जब हम एक सह-विश्वासी के दोषों का प्रसार करते हुए बोलते हैं तो ऐसा करके हम सुनहरे नियम का उल्लंघन कर रहे होते हैं, क्योंकि हम यह नहीं चाहते कि कोई हमारी अनुपस्थिति में हमारे बारे में गलत बोले।

संभव है कि हम अपने सह विश्वासी को प्रेम सहित उसके दोष के बारे में बताएं लेकिन यदि हम ऐसा बिना किसी ढोंग के कर सकें तो निश्चय ही उस दशा में हम दोषी नहीं होते, जिसका सामना एक व्यक्ति के रूप में हम कर रहे होते हैं। तौभी, एक अविश्वासी के साथ इस तरह से करना पूर्णतया समय को बर्बाद करना होगा, जो अगले पद का विषय भी है। यीशु ने कहा,

> पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें (मत्ती 7:6)।

इसी तरह से नीतिवचन कहता है, ''ठट्ठा करनेवाले को न डांट ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर रखे, बुद्धिमान को डांट, वह तो तुझ से प्रेम रखेगा'' (नीति. 9:8)। यीशु ने एक अन्य अवसर पर अपने पैरों की धूल उन पर झाड़ने को कहा जो सुसमाचार को अस्वीकार कर देते हैं। एक बार ''कुत्तों'' की सत्य को न स्वीकारने की पहचान होने पर परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके सेवक उन पर अपना समय बर्बाद करें।

प्रार्थना करने का प्रोत्साहन

Encouragement to Pray

अंतत: हम यीशु के संदेश के अंतिम विभाग पर आ पहुंचे हैं। इसका आरम्भ कुछ प्रोत्साहक प्रार्थना प्रतिज्ञाओं के साथ होता है :

> मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढता है, वह पाता है। और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे? सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा (मत्ती 7:7-11)।

''अहा!'' एक पाठक इस तरह से कह सकता है, ''पहाड़ी संदेश के इस भाग का पवित्रता से कुछ लेना-देना नहीं है।''

यह सब हमारे प्रार्थना में मांगने, खटखटाने और ढूंढने पर निर्भर है। ''धर्म की भूख और प्यास रखनेवालों के समान हमें भी यीशु के संदेश में दी गई आज्ञाओं को पूरा करने की इच्छा रखनी चाहिए, और यह इच्छा निश्चय ही हमारी प्रार्थना को प्रभावित करेगी। वास्तव में, इस संदेश में यीशु द्वारा की गई आदर्श प्रार्थना परमेश्वर की इच्छा और पवित्रता के पूरा होने की अभिलाषा की अभिव्यक्ति है।

इसके अतिरिक्त, इन्हीं प्रार्थना प्रतिज्ञाओं पर लूका के संस्करण का अन्त इस तरह से होता है, ''सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केवालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?'' (लूका 11:13)। यीशु हमें ''अच्छी चीज़ों'' को देने की प्रतिज्ञा करते समय आरामदायक चीज़ों के बारे में नहीं सोच रहा था। उसके विचार में पवित्र आत्मा एक ''अच्छा दान'' है,

क्योंकि पवित्र आत्मा हमें पवित्र करते हुए हमारी उस सुसमाचार को फैलाने में सहायता करता है जो दूसरे लोगों को पवित्र बनाता है और पवित्र लोग स्वर्ग जाते हैं।

अन्य अच्छे उपहार वे हैं जो परमेश्वर की इच्छा के अन्तर्गत आते हैं। परमेश्वर को अपनी इच्छा और अपने राज्य की अधिक चिन्ता है, और इसीलिए हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि यदि हमारी प्रार्थनाएँ परमेश्वर के राज्य के विस्तार के अनुकूल होंगी तो हमें उनका जवाब अवश्य ही मिलेगा।

एक संक्षिप्त किया गया कथन
A Summarizing Statement

अब हम एक ऐसे पद पर आ पहुंचे हैं जिसे हमें एक कथन के रूप में लेना चाहिए जो यीशु द्वारा इस विषय पर कहे गए प्रत्येक कथन को व्यावहारिक रूप से संक्षिप्त करता है। अधिकांश टिप्पणी करनेवाले इससे चूक जाते हैं; लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि हम ऐसा नहीं करें। यह विशिष्ट पद निस्संदेह संक्षिप्त किया हुआ कथन है, क्योंकि इसका आरम्भ *इस कारण* शब्द से होता है। यह पिछले निर्देशों से जुड़ा है, और प्रश्न उठता है : जो कुछ यीशु ने कहा यह उसे कितना संक्षिप्त करता है? आइये इसे पढ़ें और विचार करें :

> इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है'' (मत्ती 7:12)।

यह कथन प्रार्थना के संबन्ध में कुछ पहले दिये गए पदों का सारांश नहीं हो सकता, अन्यथा इसका कोई अर्थ नहीं होगा।

स्मरण रखें कि यीशु ने अपने संदेश के आरम्भ में इस गलत विचारधारा के विरुद्ध चेतावनी दी कि वह *व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता की शिक्षा* को समाप्त करने आया था (देखें मत्ती 5:17)। अपने संदेश के प्रमुख विषय से लेकर हमारे इस पद तक पहुंचने तक, उसने पुराने नियम की शिक्षाओं को स्पष्ट करने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया। अत:, वह अपने द्वारा दी गई आज्ञाओं की *प्रत्येक चीज़* को संक्षिप्त करता है, जिसे उसने व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं से लिया था : ''इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि *व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं* की शिक्षा यही है'' (7:12)। ''व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता'' वाक्यांश मत्ती 5:17 और 7:12 के बीच में जो कुछ यीशु ने कहा उसे जोड़ता है।

अब यीशु द्वारा अपने संदेश का निष्कर्ष देना आरम्भ करने पर वह अपने प्राथमिक विषय को एक बार फिर दोहराता है—*केवल पवित्र लोग ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।*

> सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं (मत्ती 7:13-14)।

निश्चय ही सकरा फाटक और मार्ग जीवन की ओर लेकर जाता है, थोड़े ही उसे पाते हैं—जो कि उद्धार का प्रतीक है। चौड़ा फाटक और चाकल मार्ग विनाश की ओर लेकर जाता है—अधिकांश लोगों का पथ नरकवास का प्रतीक है। इस कथन से पूर्व यीशु द्वारा कही गई प्रत्येक चीज़ का अर्थ चाहे कुछ भी हो, यदि इस संदेश का कुछ तर्कसंगत उद्‌भव हो, यदि संप्रेषणकर्ता के रूप में यीशु बुद्धि से परिपूर्ण हो, तो इसका स्वाभाविक अर्थ होगा कि सकरा मार्ग यीशु के पीछे जाने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का मार्ग है। चौड़ा मार्ग इसके प्रतिकूल होगा। कितने दिखावटी मसीही इस संदेश में बताए गए सकरे मार्ग पर हैं? शिष्य निर्माता सेवक निश्चय ही सकरे मार्ग पर हैं, और वे अपने शिष्यों को भी उसी मार्ग पर लेकर जा रहे हैं।

कुछ दिखावटी मसीहियों के लिए यह परेशानी में डालनेवाला हो सकता है कि यीशु ने इस संदेश में उस पर भरोसा या विश्वास करने के बारे में कुछ नहीं कहा जबकि उद्धार और नरकवास के बारे में वह अधिक बोला है। भरोसे और व्यवहार के बीच अविभाजित संबन्ध को समझनेवाले के लिए यह संदेश कोई समस्या उत्पन्न नहीं करता। यीशु का आज्ञा पालन करने वाले लोग अपने कार्यों से अपने विश्वास को दिखाते हैं। उसकी आज्ञा का पालन न करनेवाले उसके परमेश्वर के पुत्र होने पर विश्वास नहीं करते। हमारा उद्धार परमेश्वर की ओर से न केवल हम पर किये गए अनुग्रह का संकेत है, बल्कि यह हमारे जीवनों में होनेवाला रूपांतरण भी है। हमारी पवित्रता निश्चय ही उसकी पवित्रता है।

झूठे धार्मिक अगुवों की पहचान कैसे करें
How to Recognize False Religious Leaders

अपने द्वारा निकाले गए निष्कर्ष में जारी रहते हुए यीशु ने अपने शिष्यों को उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं के विरुद्ध चेतावनी दी जो विनाश की ओर लेकर जाते हैं। ये परमेश्वर के प्रति निष्कपट नहीं हैं; बल्कि छल का रूप धारण किये हुए हैं। सभी झूठे शिक्षक और अगुवे इसी श्रेणी में आते हैं। उन्हें कैसे पहचाना जा सकता है?

> झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या झाड़ियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल

> लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। जो मुझ से, ''हे प्रभु, हे प्रभु'' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; ''हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?'' तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि ''मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ'' (मत्ती 7:15-23)।

यीशु ने संकेत दिया कि झूठे शिक्षक धोखा देनेवाले हैं। उनके सही होने के कुछ बाहरी संकेत हैं। हो सकता है कि उन्होंने यीशु को अपना प्रभु माना हो, भविष्यद्वाणी की हो, दुष्टात्माओं को निकाला हो और चमत्कार किये हों। लेकिन ''भेड़ के कपड़ों'' में ''फाड़ खानेवाले भेड़िये'' छिपे होते हैं। वे सच्ची भेड़ें नहीं हैं। यह कैसे जाना जा सकता है कि वे सही हैं या गलत? सही चरित्र को उनके ''फलों'' से जाना जा सकता है।

यीशु किन फलों के बारे में बोल रहा था? निस्संदेह, उनके पास चमत्कार के फल नहीं हैं। इसके विपरीत, यीशु ने जो कुछ सिखाया वे उसके प्रति आज्ञाकारिता के फल हैं। सच्ची भेड़ें पिता की इच्छा को पूरा करती हैं। झूठे लोग ''कुकर्म करनेवाले'' हैं (7:23)। अत: हमारी ज़िम्मेदारी अपने जीवनों से वह करने की हो जाती है जो कुछ यीशु ने सिखाया और आज्ञा दी।

आज कलीसिया में असंख्य झूठे शिक्षक पाए जाते हैं, और हमें हैरान नहीं होना चाहिए क्योंकि यीशु और पौलुस दोनों ने हमें आगे इसकी चेतावनी दी कि अन्त समय के आने तक हमें इससे कम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए (देखें मत्ती 24:11; 2तीमु. 4:3-4)। हमारे दिनों में आज सबसे अधिक प्रचलित शिक्षक वे हैं जो सिखाते हैं कि अशुद्ध लोग भी स्वर्ग जाएंगे। वे करोड़ों लोगों के अनन्त आशा के उत्तरदायी हैं। उन्हीं के बारे में जौन वेस्ली ने लिखा,

> यह कितना भयानक है! – जब परमेश्वर के राजदूत शैतान के एजेन्ट के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। जब वे, जिन्हें लोगों को स्वर्ग जाने के मार्ग की शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया होता है उन्हें नरक जाने की शिक्षा देते हैं... यदि यह पूछा जाए कि ''ऐसा किसने किया?'' ... तो मैं इसका जवाब दूंगा, दस हज़ार बुद्धिमान सम्मानित पुरुषों ने ऐसा किया उन सभी ने भी जो किसी

> भी डिनोमिनेशन के थे, जिन्होंने घमण्ड, कपट, कामुकता, संसार से प्रेम, आनन्द उठाने, अधर्म और अन्याय, सरलता, लापरवाही, हानिरहित अनुपयोगी प्राणियों को बढ़ावा दिया, ऐसा व्यक्ति जिसने धार्मिकता के लिए दुख उठाना न चाहा, यह कल्पना करते हुए कि वह स्वर्ग के मार्ग पर है। ये संसार के उच्च भाव में झूठे भविष्यद्वकता हैं। ये परमेश्वर और मनुष्य दोनों के ही द्रोही हैं– वे रात्रि के क्षेत्र में लोगों के पीछे लगे हैं, और नाश किये जाने वाले प्राणों के जब कभी भी वे पीछे जाते हैं, नरक उनके आगमन पर उनसे मिलने को नीचे से ऊपर आएगा।''[48]

रोचक है, वैस्ली विशिष्ट रूप से उन झूठे शिक्षकों के बारे में बोल रहा था जिनके बारे में यीशु ने मत्ती 7:15:-23 में चिताया था।

एक बार फिर से यीशु ने स्पष्टता से कहा, उसके प्रतिकूल जो आज के बहुत से झूठे शिक्षक हमें बताते हैं, कि अच्छे फल न लाने वाले नरक में डाल जाएंगे (देखें 7:19)। इसके अतिरिक्त, यह केवल शिक्षकों ओर भविष्यद्वक्ताओं पर ही लागू नहीं होता, बल्कि प्रत्येक पर। यीशु ने कहा,'' जो मुझसे, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है'' (मत्ती 7:21)। जो भविष्यद्वक्ताओं के लिए सत्य है वही सभी के लिए भी सत्य है। यीशु का प्रमुख विषय यह है– केवल पवित्र ही परमेश्वर के राज्य के *अधिकारी होंगे।* यीशु की आज्ञा न मानने वाले लोगों के लिए नरक निर्धारित है।

एक व्यक्ति के बाहरी व भीतरी स्वरूप के बीच यीशु द्वारा किये गए संयोजन पर भी ध्यान दें। ''अच्छा'' पेड़ अच्छे फल लाता है। ''बुरा'' पेड़ अच्छे फल नहीं ला सकता। अच्छे फल जो बाहर दिखाई देते हैं वह मनुष्य का स्वभाव है। अपने अनुग्रह से, परमेश्वर ने यीशु पर सच में विश्वास करने वालों के स्वभाव को बदला है।[49]

---

48. जौन वैस्ली के कार्य (बेकर : ग्रेंड रेपिड्स, 1996), द्वारा जौन, वैस्ली, 1872 के संस्करण से पुन: प्रकाशित, वैसेलियन मैथोडिस्ट बुक रुम, लंदन, पृ. 441, 416

49. दूसरों के पापों को लेकर लोग बहाना बनाते हुए जिस सामान्य बात को कहते हैं उसके बारे में कहने के सुवअसर का मैं विरोध नहीं कर सकता: ''हम नहीं जानते कि उनके मन में क्या है।'' इसके विरोध में यीशु ने यहां कहा कि बाहरी भीतरी को प्रगट करता है। दूसरे रूप में, उसने कहा,'' जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है'' (मत्ती 12:34)। जब एक व्यक्ति घृणा के शब्द बोलता है, यह उसके मन में भरी घृणा की ओर संकेत करता है। यीशु ने हमें यह भी बताया कि ''क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरी-बुरी चिन्ता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती है (मर. 7:21-22)। जब एक व्यक्ति व्यभिचार करता है, हम जानते हैं कि उसके मन में क्या होता है– व्यभिचार।

एक अन्तिम चेतावनी और सारांश
A Final Warning and Summary

यीशु ने एक अन्तिम चेतावनी देते व अपने उदाहरण को संक्षिप्त करते हुए अपने संदेश का समापन किया। आपकी अपेक्षा के अनुसार, यह उसके विषय का एक उदाहरण है– *केवल पवित्र ही परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।*

> इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं और आन्धियां घर चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं; परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं और अन्धियां चली और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिर कर सत्यानाश हो गया (मत्ती 7:24-27)।

यीशु का अन्तिम उदाहरण ''जीवन की सफलता का सूत्र नहीं है जैसा कुछ इसका प्रयोग करते हैं। संदर्भ दिखाता है कि वह इस बारे में सलाह नहीं दे रहा था कि उसकी प्रतिज्ञाओं में विश्वास रखकर कठिन समयों में आर्थिक रूप से कैसे सम्पन्न हुआ जा सकता है। जो कुछ यीशु ने अपने पहाड़ी संदेश में कहा था, यह उसका सारांश है। उसके कहे अनुसार परमेश्वर के आने वाले क्रोध से डरने की ज़रूरत नहीं है। उसकी आज्ञा का पालन न करने वाले मूर्ख हैं और वे ''अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे'' (1 थिस्स. 1:9)।

एक प्रश्न का जवाब
Answer to an Question

क्या यह संभव नहीं है कि यीशु का पहाड़ी उपदेश केवल उसके उन्हीं अनुयायियों पर लागू होता था जो उसके बलिदानी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले रहते थे? क्या वे अपने उद्धार के अस्थायी साधनों से व्यवस्था के अधीन नहीं थे, लेकिन यीशु के उनके पापों के लिए मारे जाने के पश्चात्, क्या वे विश्वास से बच गए थे, अत: इस तरह से संदेश में स्पष्ट किए गए विषय को रद्द कर दिया था?

यह एक बुरा सिद्धान्त है। कोई भी कभी अपने कार्यों से नहीं बचा है। पुरानी वाचा, से पहले या उसके समय में ऐसा हमेशा विश्वास से हुआ है। पौलुस रोमियों में तर्क देता है कि इब्राहीम (पुरानी वाचा से पहले) और दाऊद (पुरानी वाचा के समय में) दोनों ही विश्वास से धर्मी ठहराए गए थे, न कि कार्यों से।

इसके अतिरिक्त, इस बात की भी असंभावना थी कि यीशु का कोई भी श्रोता कामों से उद्धार पा सके क्यों कि सभी ने पाप किया था और परमेश्वर की महिमा से रहित थे (देखें रोमि 3:23)। केवल परमेश्वर का अनुग्रह ही उन्हें बचा सका, और केवल विश्वास ही उसके अनुग्रह को स्वीकार कर सकता है।

दुर्भाग्यवश, आज कलीसिया में अधिकांश लोग यीशु की आज्ञाओं को उच्च उद्देश्यों के लिए सेवा करने के रूप में देखते हैं, इसकी तुलना में कि हमें दोषी भावना का अनुभव कराए जिससे हम कार्यों से उद्धार पाने की असंभावना को देखें। अब जबकि हमें ''संदेश मिल गया है'' और विश्वास द्वारा बचाए जाने पर, हम उसकी बहुत सी आज्ञाओं की उपेक्षा कर सकते हैं। हम दूसरों को बचाना चाहते हैं, इसलिए हम फिर से आज्ञाओं को लेकर लोगों को दिखाते हैं कि वे कितने पापी हैं इसलिए वे ''विश्वास'' से ही बचाए जाएंगे जो कि कार्यों से रिक्त है।

इसके अलावा, यीशु ने अपने शिष्यों को यह नहीं बताया, ''संसार में जाकर शिष्य बनाओ, कि वे यह जान लें, कि एक बार दोष भावना का अनुभव करने पर ही वे विश्वास से बचेंगे, मेरी आज्ञाएं उनके जीवनों में उनके उद्देश्यों के लिए दी गई हैं।'' इसके विपरीत, उसने कहा, ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ *और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ*'' (मत्ती 28:19-20)। शिष्य निर्माता सेवक यही कर रहे हैं।